

जिंदगी हमेशा आपको एक नया मौका देती है, सरल शब्दों में उसे कल कहते हैं।

ओखला डिपो में भ्रष्टाचार का काला अध्याय: डीटीसी प्रबंधक पर वसूली, धमकी और घर बैठे ड्यूटी के गंभीर आरोप

संजय कुमार बाठला



दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के ओखला डिपो में कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों के बीच आक्रोश की लहर दौड़ गई है। वर्कशॉप में काम करने वाले ड्राइवरों के बीच खुलेआम चर्चा हो रही है कि डिपो प्रबंधक कम हाजिरी के बहाने धमकाते हैं और एग्जीक्यूटिव से पहले 2000 से 10,000 रुपये तक वसूल लेते हैं। इससे भी बढ़कर, प्रबंधक स्वयं 9000 रुपये मासिक वेतन पर घर बैठे 26 दिन की पूर्ण ड्यूटी दर्ज करवा लेते हैं। कर्मचारी क्षेत्रीय प्रबंधक (आरएम साउथ) को भी इस घपले का हिस्सा मान रहे हैं। दिल्ली सरकार मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के तत्काल हस्तक्षेप की मांग तेज हो गई है।

कर्मचारियों के आरोप:
विस्तृत चित्रधमकी और वसूली का modus operandi: डिपो प्रबंधक विशेष रूप से उन ड्राइवरों को टारगेट करते हैं जिनकी सालाना हाजिरी 240-245 दिनों से कम होती है। गुणों के माध्यम से एग्जीक्यूटिव करने से पहले 'हाजिरी सुधार' के नाम पर 2000 से 10,000 रुपये ऐंटे जाते हैं। एक अनाम कर्मचारी ने कहा, 'रहम 862 रुपये प्रतिदिन कमाते हैं, फिर भी प्रबंधक का पैट भरने को मजबूर हैं।

किस-किस का गुजारा करें?
"प्रबंधक की दोहरी जिंदगी: चर्चा है कि प्रबंधक खुद उच्च वेतन (9000 रुपये माह) पर कार्यालय न आकर घर से ही 26 दिन की ड्यूटी पूरी करवा लेते हैं। यह डीटीसी नियमों का खुला उल्लंघन है।

आरएम साउथ की संलिप्तता:
कर्मचारी पूछ रहे हैं कि क्या क्षेत्रीय प्रबंधक (RM साउथ) इस व्यवस्था के पीछे हैं? कई मामलों में ऐसी शिकायतें दबा दी गईं।

डिपो का माहौल: वर्कशॉप में हल्ला-गुल्ला और आक्रोश का वातावरण है। कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी बार-बार न्याय की गुहार लगा रहे हैं। कानूनी और नीतिगत पृष्ठभूमि डीटीसी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की हाजिरी नीति दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग निर्देशों पर आधारित है, जिसमें न्यूनतम 240 दिन की उपस्थिति अनिवार्य है। लेकिन वसूली श्रम कानूनों (कॉन्ट्रैक्ट लैबर एक्ट 1970) का उल्लंघन है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने हालिया फैसलों में (जैसे WP(C) 2025/संख्या 2025/संख्या) सार्वजनिक क्षेत्र में शोषण पर सख्ती बरतने को कहा है। आरएम साउथ की भूमिका जांच का विषय हो सकती है, क्योंकि क्षेत्रीय अधिकारी डिपो की निगरानी के जिम्मेदार हैं।

कर्मचारियों पर प्रभाव: आर्थिक और मानसिक बोझ
आर्थिक नुकसान: 862 रुपये दैनिक मजदूरी पर गुजारा करने वाले ड्राइवरों के लिए वसूली परिवार के लिए संकट है। महंगाई के दौर में यह लूट समान है।

मानसिक तनाव: धमकियों से डर का माहौल। कई कर्मचारी नौकरी छोड़ने को मजबूर।

सेवा पर असर: डिपो में अनियमितता से बस रखरखाव प्रभावित, जो दिल्लीवासियों की सुरक्षा को खतरा।

जनहित में मांगें और सुझाव
परिवहन विशेष दिल्ली सरकार से अपील करता है: मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता तत्काल उच्च स्तरीय जांच समिति गठित करें।

- * डिपो प्रबंधक और आरएम साउथ पर निर्यात की कार्रवाई हो।
- * कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की हाजिरी डिजिटल ट्रैकिंग लागू हो।
- * भ्रष्टाचार रोकने हेतु विसलवेलोअर नीति शीघ्र अमल में लाएं।
- * यह मामला डीटीसी में व्याप्त भ्रष्टाचार का नमूना है। पाठक ऐसी सूचनाएं parivahanvishesh@gmail.com पर भेजें।
- * परिवहन विशेष जनहित में लगातार खोजबीन जारी रखेगा।

भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17A अवैध रिश्वत की मांग के मामलों पर लागू नहीं: सुप्रीम कोर्ट

संजय कुमार बाठला

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 17-A का संरक्षण लोक सेवकों द्वारा अवैध रिश्वत की मांग के मामलों में लागू नहीं होता। कोर्ट ने कहा कि यह प्रावधान केवल उन मामलों तक सीमित है, जहाँ अपराध सरकारी कर्तव्यों के निर्वहन के दौरान लिए गए निर्णय या दी गई सिफारिशों से संबंधित हो।

जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और जस्टिस एस.सी. शर्मा की खंडपीठ ने कहा — "धारा 17-A एक विशेष उद्देश्य से लाई गई है। यह उन अपराधों पर लागू होती है जो लोक सेवक द्वारा अपने आधिकारिक कर्तव्यों के निर्वहन में लिए गए निर्णय या दी गई सिफारिशों से संबंधित हैं। अवैध रिश्वत की मांग के मामलों में धारा 17-A किसी भी तरह से लागू नहीं हो सकती।"

धारा 17-A के अनुसार, जब किसी लोक सेवक के खिलाफ आरोप उसके आधिकारिक निर्णय या सिफारिश से जुड़े हों, तभी जांच शुरू करने से पहले सरकार की पूर्व स्वीकृति आवश्यक होती है।



यह मामला राजस्थान हाईकोर्ट के उस निर्णय से जुड़ा था, जिसमें कहा गया था कि राज्य का एंटी-कॉर्प्शन ब्यूरो (एसीबी), राज्य में पदस्थ केंद्र सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ भी भ्रष्टाचार के मामलों की जांच और एफआईआर दर्ज कर सकता है, और इसके लिए सीबीआई की पूर्व अनुमति आवश्यक नहीं है।

याचिकाकर्ता पर पीसीएक्ट की धारा 7 और 7-A के तहत आरोप थे। उसने दलील दी कि केंद्र सरकार की पूर्व स्वीकृति के बिना जांच नहीं हो सकती। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने यह तर्क खारिज करते हुए कहा कि— रिश्वत की मांग आधिकारिक कर्तव्य का हिस्सा नहीं है, इसलिए, ऐसे मामलों में धारा 17-A के तहत पूर्व स्वीकृति की आवश्यकता नहीं पड़ती।

राज्य पुलिस या राज्य एसीबी भी केंद्र सरकार के कर्मचारियों के खिलाफ जांच कर सकती है। इस प्रकार, सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखते हुए याचिका खारिज कर दी और साफ किया कि धारा 17-A का दुरुपयोग कर रिश्वतखोरी के मामलों में जांच रोकी नहीं जा सकती।

समाज सेवक एवं स्वराज इंडिया पार्टी के बादली विधान सभा अध्यक्ष गजराज यादव की जनता से अपील

(क्षेत्र की आम समस्याएँ एवं सुझाव दर्ज करवाए)
संजय कुमार बाठला

गजराज यादव अध्यक्ष बादली विधान सभा स्वराज इंडिया पार्टी आपके क्षेत्र का जन सेवक क्षेत्र की आम समस्याओं के समाधान के लिए आप सभी के साथ मिल कर कार्य करने को तत्पर है। क्षेत्र में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता, प्रशासन इत्यादि से जुड़े मुद्दे या कोई अन्य सुझाव जिसे आप साझा करना चाहते हैं और मेरे द्वारा उस समस्या के समाधान की अपेक्षा करते हैं तो आप मेरे व्हाट्सएप नंबर पर सीधे बेझिझक भेज सकते हैं। अपनी समस्या या सुझाव दर्ज करने के लिए 9810260498, 9811260498 पर सम्पर्क करें।

यूपीआई भुगतान तेज और सुविधाजनक है लेकिन एक छोटी सी गलती भी बड़ा नुकसान करा सकती है।

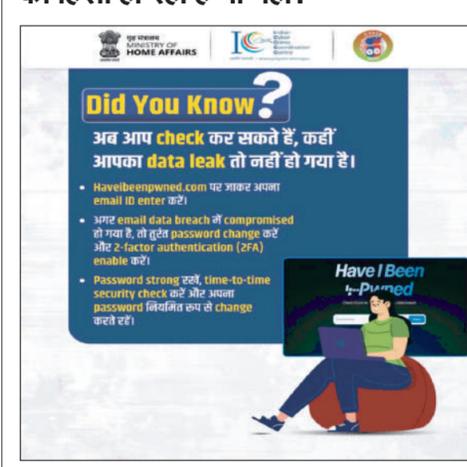
पिकी कुंड़

रिसीवर का नाम हो या राशि, कलेक्ट रिक्वेस्ट हो या प्रेशर कॉल, हर कदम पर थोड़ा सा रुकना जरूरी है। स्कैमर्स अक्सर रिफंड, कैशबैक, प्राइज या अकाउंट ब्लॉक जैसे बहाने बनाकर जल्दी भुगतान करवाने की कोशिश करते हैं। याद रखें, पैसे लेने के लिए कभी भी भुगतान करना जरूरी नहीं होता। यूपीआई भुगतान करने से पहले त्वरित जांच करें: रिसीवर का नाम सत्यापित करें रकम की दोबारा जांच करें पैसे पाने के लिए कभी भुगतान ना करें अज्ञात संग्रहण अनुरोध स्वीकृत न करें दबाव में आकार "अभी करो" वाली बात न मानें UPI भुगतान करते समय सत्यापित करें, दोबारा जांचें और जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें।



एक सेकंड का सोचना आपको बड़े नुकसान से बचा सकता है। अगर आप साइबर धोखाधड़ी के शिकार हैं तो तुरंत 1930 पर कॉल करके या cybercrime.gov.in पर जाकर इसकी रिपोर्ट करें।

क्या आप जानते हैं? आप बिना किसी ऐप के साइनअप के ये चेक कर सकते हैं कि आपकी ईमेल आईडी में किसी डेटा ब्रीच का हिस्सा हो रहा है या नहीं।



क्या आप जानते हैं? बिना किसी ऐप या सिनेअप के ही आप जान सकते हैं कि आपके ईमेल पर किसी डेटा ब्रीच का हिस्सा है या नहीं! डेटा लीक के बाद समझौता किए गए खाते अक्सर धोखाधड़ी, पहचान का दुरुपयोग और अनधिकृत पहुंच का शिकार बंद हो जाते हैं - खास जब पासवर्ड का पुनः उपयोग किया जाता है। नियमित जांच, मजबूत पासवर्ड और 2-कारक प्रमाणीकरण (2एफए) जैसे सरल कदम आपकी डिजिटल सुरक्षा को काफी हद तक मजबूत बना सकते हैं। साइबर सुरक्षा में जागरूकता ही पहली सुरक्षा है। यदि आप साइबर धोखाधड़ी के शिकार हैं, तो तुरंत 1930 पर कॉल करके या cybercrime.gov.in पर जाकर इसकी रिपोर्ट करें।

ब्लैक हैट SEO आधारित अवैध वेबसाइट प्रमोशन पर परामर्श

पिकी कुंड़

बढ़ती साइबर अपराध की घटनाओं के मद्देनजर, नागरिकों को सच इंजन रैंकिंग में अनधिकृत रूप से हानिकारक या भ्रामक सामग्री जोड़कर की जा रही गतिविधियों के प्रति सतर्क किया जाता है। भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) की राष्ट्रीय साइबर अपराध खतरा विश्लेषण इकाई (NCTAU) ने पाया है कि साइबर अपराधी प्रतिष्ठित भारतीय वेबसाइटों की कमजोरियों का दुरुपयोग कर उपयोगकर्ताओं को अवैध सट्टेबाजी, जुआ, अश्लील तथा पाइरेटेड सामग्री वाली वेबसाइटों पर रीडायरेक्ट कर रहे हैं। यह अवैध गतिविधि, जिसे ब्लैक हैट सच इंजन ऑप्टिमाइजेशन (SEO) कहा जाता है, वित्तीय धोखाधड़ी एवं कानूनी जोखिम उत्पन्न करती है। नागरिकों एवं वेबसाइट मालिकों को सलाह दी जाती है कि:

1. किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सच परिणामों को सावधानीपूर्वक सत्यापित करें।
2. रीडायरेक्ट या संदिग्ध वेबसाइटों से किसी भी एप्लिकेशन को डाउनलोड करने या व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचें।
3. वेबसाइट से जुड़े सिस्टम, प्लग-इन और सर्वर को नियमित रूप से अपडेट रखें।
4. वेबसाइट पर मेलवेयर, अनधिकृत रीडायरेक्ट या संदिग्ध SEO गतिविधियों की निगरानी करें।
5. अनधिकृत एक्सेस या कंटेंट इंजेक्शन,



आईटी अधिनियम 2000 की धारा 43 एवं 66 के अंतर्गत दंडनीय अपराध है। 6. जब आप Google या किसी दूसरे सच इंजन पर सच करते हैं, तो आपको रटॉप रिजल्ट देख सकता है, लेकिन इसकी कोई गारंटी नहीं है कि हर टॉप रिजल्ट सुरक्षित हो। 7. अगर आप किसी भरोसेमंद या जानी-मानी वेबसाइट पर क्लिक करते हैं, लेकिन अचानक आपको बेटिंग, गैबलिंग, एडल्ट या गैर-कानूनी वेबसाइटों पर रीडायरेक्ट कर दिया जाता है, तो यह सिर्फ एक गड़बड़ी नहीं है - यह एक स्कैम हो सकता है। साइबर क्रिमिनल्स ब्लैक हैट SEO का इस्तेमाल इन चीजों के लिए करते हैं: * असली वेबसाइटों को हैक करना * सर्च रिजल्ट में हेरफेर करना * और यूजर्स को गैर-कानूनी और खतरनाक वेबसाइटों पर रीडायरेक्ट करना **याद रखें:** * सर्च रिजल्ट पर ऑख बंद करके क्लिक न करें * अगर कोई वेबसाइट अचानक रीडायरेक्ट कर रही है, तो पेज को तुरंत बंद कर दें * उन वेबसाइटों से ऐप डाउनलोड न करें जो आपको रीडायरेक्ट कर रही हैं * अनजान लिंक पर परसलन या फाइनेंशियल डिटेल्स शेयर न करें * वेबसाइट मालिकों को संदिग्ध गतिविधि के लिए अपनी वेबसाइटों को रेगुलर चेक करना चाहिए इस संबंध में भारतीय साइबर क्राइम कोऑर्डिनेशन सेंटर (I4C), गृह मंत्रालय द्वारा एक ऑफिशियल एडवाइजरी जारी की गई है: https://i4c. किसी भी साइबर धोखाधड़ी या संदिग्ध गतिविधि की तुरंत रिपोर्ट 1930 पर कॉल करके या www.cybercrime.gov.in पर करें। नागरिकों से अनुरोध है कि वे सतर्क रहें और गृह मंत्रालय एवं भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र द्वारा जारी आधिकारिक परामर्शों का पालन करें।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिकी कुंड़

अपनी अपना डिजिटल हेल्थ चेक-अप करें इन 5 महत्वपूर्ण जाँचों के साथ:

1. अपना ईमेल आईडी जाँचें
2. haveibeenpwned.com पर जाएं।
3. यदि आपका ईमेल किसी डेटा लीक में पाया जाता है: - तुरंत पासवर्ड बदलें। - 2FA/MFA (ऑथेंटिकेटर

आज का साइबर सुरक्षा विचार : जैसे हम अपनी सेहत के लिए नियमित हेल्थ चेक-अप करवाते हैं, वैसे ही डिजिटल हेल्थ चेक-अप भी जरूरी है।

ऐप के साथ) सक्रिय करें। - इससे आपका ईमेल अधिक सुरक्षित रहेगा।

2. अपने नाम पर कितने सिम सक्रिय हैं (Sanchar Saathi - TAF COP) - www.sancharsaathi.gov.in पर जाएं। - "Know Your Mobile Connections" पर क्लिक करें। - अपना मोबाइल नंबर डालें -> OTP से सत्यापन करें। - आपके नाम पर जारी सभी सिम दिखेंगे। - किसी अनजान सिम को तुरंत रिपोर्ट/डिस्कनेक्ट करें।
3. हमेशा आधिकारिक पोर्टल का ही उपयोग करें।
4. आधार बायोमेट्रिक्स लॉक स्थिति जाँचें
 - UIDAI.gov.in -> "My Aadhaar" -> "Lock/Unlock Biometrics" पर जाएं।
 - आधार नंबर/VID + कैप्चा डालें -> OTP जनरट करें -> लॉगिन करें।
 - देखें कि बायोमेट्रिक्स लॉक है या नहीं।
 - लॉक करने से आपके फिंगरप्रिंट/आईरिस का दुरुपयोग नहीं हो सकता।
 - 5. जरूरत पड़ने पर ही अनलॉक करें (जैसे बैंकिंग, सिम जारी करने के लिए)।
 - 6. WhatsApp सुरक्षा
 - Two-Step Verification (6 अंकों का PIN) सक्रिय करें।
 - WhatsApp को हमेशा अपडेटेड रखें।
 - संदिग्ध लिंक/अटैचमेंट पर क्लिक न करें।
 - Linked Devices की जाँच करें और अनजान डिवाइस हटाएँ।
 - Block & Report का उपयोग करें।
 - 7. गैर-जरूरी चैट्स को Mute करें।
 - 8. 5 मोबाइल में छिपे APK/साईटों की जाँच करें
 - Installed Apps देखें: Settings -> Apps -> All Apps।
 - Permissions जाँचें: कैमरा, माइक्रोफोन, लोकेशन, SMS तक पहुँच वाले अनजान ऐप्स हटाएँ।
 - Device Admin Apps देखें और संदिग्ध ऐप्स की एडमिन अनुमति हटाएँ।
 - Battery/Data Usage जाँचें: असामान्य खपत वाले ऐप्स संदिग्ध हो सकते हैं।
 - 9. Play Protect Scan चलाएँ (Google Play Store -> Play Protect)।
 - 10. Unknown Sources बंद करें और केवल भरोसेमंद ऐप्स से इंस्टॉल करें।
 - 11. *संदिग्ध APK तुरंत हटाएँ।
 - 12. अंतिम विचार यह है आपका डिजिटल हेल्थ चेक-अप कितना है।
 - 13. इसे सुरक्षित रखें, अपनाएँ और अपने परिवार, मित्रों व सहकर्मियों के साथ साझा करें - क्योंकि उनकी डिजिटल सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।



स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी



पिंकी कुंडू

मुना चना सचमुच प्रोटीन का एक सस्ता, अच्छा और असरदार स्रोत है, और इसके पोषण-विज्ञान तथा स्वास्थ्य लाभ सम्बन्धी ताजा शोध और जानकारी इस तथ्य को और भी पुष्ट करते हैं।

मुना चना: सस्ता, नेचुरल और असरदार प्रोटीन स्रोत मुना चना, जिसे अंग्रेजी में Roasted Chickpeas कहते हैं, एक पारंपरिक भारतीय स्नैक है जो प्रोटीन, फाइबर, विटामिन और खनिजों से भरपूर होता है। यह सस्ता, आसानी से उपलब्ध और हर उम्र के लिए फायदेमंद पोषण स्रोत है।

प्रोटीन का महत्व और मुने चने की भूमिका
* प्रोटीन शरीर का मूलभूत निर्माण-खंड है — यह मांसपेशियों, कोशिकाओं

और एंजाइमों के निर्माण व मरम्मत में मदद करता है।

* 100 ग्राम चने में लगभग 14-18 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है, जो कि एक पौध-आधारित स्रोत के लिए बहुत अच्छा है।

इसका मतलब: मुने चने महंगे प्रोटीन पाउडर या सप्लीमेंट्स का एक सस्ता, प्राकृतिक और संतुलित विकल्प हो सकते हैं — विशेषकर उन लोगों के लिए जो शाकाहारी हैं या अतिरिक्त प्रोटीन-वाले खाद्य पदार्थों की तलाश में हैं।

मुना चना क्यों स्वास्थ्य-प्रद है?

- उच्च प्रोटीन और फाइबर
- प्रोटीन मांसपेशियों को मजबूत बनाता है और भूख को नियंत्रित करता है।

* फाइबर पाचन को बेहतर बनाता है और कब्ज की समस्या को कम करता है।

2. ब्लड शुगर और वजन नियंत्रण
* मुने चने में लो ग्लाइसेमिक इंडेक्स (GI) होता है, जिससे शुगर धीरे-धीरे रिलीज होती है और ब्लड शुगर में अचानक वृद्धि नहीं होती।

* ज्यादा प्रोटीन व फाइबर होने की वजह से पेट जल्दी भरा रहता है और वजन नियंत्रित रहता है।

3. हृदय स्वास्थ्य और कोलेस्ट्रॉल
कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है कि चने और अन्य दालों का नियमित सेवन खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करते हैं और दिल संबंधी जोखिम को कम करने में मदद करते हैं।

नियंत्रण मुने चने रोस्टिंग के दौरान कुछ एंटीऑक्सीडेंट्स की उपलब्धता बढ़ाते हैं (जैसे पॉलीफेनॉल), जो फ्री रेडिकल डेमेज और सूजन से लड़ते हैं।

5. मिनरल्स का भंडार चने में

आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम, जिंक तथा कई विटामिन्स होते हैं — ये हड्डियों को स्वस्थ रखने, ऊर्जा बनाने और इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद करते हैं।

ताजा शोध और नवीन जानकारी

* मुने चने में पोषक तत्व अधिक सघन हो जाते हैं। रोस्टिंग से पानी निकलने के कारण प्रोटीन, फाइबर और मिनरल्स की मात्रा प्रति ग्राम बढ़ जाती है।

* हाल के शोध यह भी बताते हैं कि

चने के उत्पादों को ग्लूटेन-फ्री ब्रेड जैसे खाद्य पदार्थों में मिलाने से उन उत्पादों का पोषण और प्रोटीन पाचनीयता (digestibility) बढ़ती है।

ध्यान रखने योग्य बातें पैक किए हुए मुने चने में कभी-कभी केमिकल्स या अतिरिक्त आधिक सरल तेल/नमक मिलाए जा सकते हैं, इसलिए लेबल जांचें।

निष्कर्ष मुना चना एक सस्ता, प्रभावी, और प्राकृतिक प्रोटीन स्रोत है, जो न केवल प्रोटीन देता है बल्कि फाइबर, विटामिन, और स्वास्थ्य-वर्धक तत्व भी प्रदान करता है।



कैंसर से बचने के उपाय

आधुनिक विश्व में कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिससे सबसे ज्यादा लोगों की मृत्यु होती है। विश्व में इस बीमारी की चपेट में सबसे अधिक मरीज हैं। तमाम प्रयासों के बावजूद कैंसर के मरीजों की संख्या में कोई कमी नहीं आ रही है।

इसी कारण विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस की तरह मनाने का निर्णय लिया ताकि लोगों को इस भयानक बीमारी कैंसर से होने वाले नुकसान के बारे में बताया जा सके और लोगों को अधिक से अधिक जागरूक किया जा सके। ऐसा माना जा रहा है 2030 तक कैंसर के मरीजों की संख्या 1 करोड़ से भी अधिक हो सकती है।

एक अनुमान के मुताबिक 2005 में 7.6 लाख लोग कैंसर से मौत के आगोश में समा गए थे इतनी बड़ी संख्या में लोगों के मरने से और विश्व स्तर पर इस बीमारी के फैलने से सब चिंतित हैं।

विश्व कैंसर दिवस के इतिहास के बारे में बात करें तो इसकी सही शुरुआत वर्ष 2005 से हुई थी। तब से यह दिन विश्व में कैंसर के प्रति निरंतर जागरूकता फैला रहा है। भारत में भी इस दिन सभी स्वास्थ्य संगठनों ने जागरूकता फैलाने का निश्चय लिया है।

कैंसर से बचाव के मुख्य उपायों को हम कुछ श्रेणियों में बांट सकते हैं:

- खान-पान और पोषण आपका आहार कैंसर के विरुद्ध आपकी पहली रक्षा पंक्ति है।
- फल और सब्जियां: अपने भोजन में रंग-



कैंसर से बचाव

बिरंगे फल और सब्जियों को शामिल करें। इनमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर की कोशिकाओं की रक्षा करते हैं।

* प्रोसेस्ड फूड से दूरी: डिब्बाबंद खाना, ज्यादा नमक और प्रोसेस्ड मीट (जैसे सलामी, सॉसेज) से बचें।

* चीनी और रिफाईंड कार्ब्स: अधिक चीनी और मैदा मोटापा का कारण बनते हैं, जो कई प्रकार के कैंसर से जुड़ा है।

* पानी की पर्याप्त मात्रा: शरीर को हाइड्रेटेड रखें ताकि टॉक्सिन्स बाहर निकलते रहें।

2. हानिकारक आदतों का त्याग यह सबसे महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि कैंसर के बहुत से

मामले सीधे तौर पर आदतों से जुड़े होते हैं।

* तंबाकू का पूर्ण त्याग: चाहे सिगरेट हो, बीड़ी हो या चबाने वाला तंबाकू (गुटखा) — यह फेफड़ों, मुंह और गले के कैंसर का सबसे बड़ा कारण है।

* शराब का सीमित सेवन: शराब के अधिक सेवन से लिवर, स्तन और कोलोन कैंसर का खतरा बढ़ जाता है।

3. सक्रिय जीवनशैली गतिहीन जीवनशैली शरीर के लिए हानिकारक है।

* नियमित व्यायाम: दिन में कम से कम 30 मिनट की पैदल चाल, योग या कसरत करें।

* वजन नियंत्रण: शरीर का वजन संतुलित

रखने से हार्मोनल संतुलन बना रहता है, जिससे कैंसर की संभावना कम होती है।

4. सुरक्षात्मक उपाय बाहरी कारकों से खुद को बचाना भी जरूरी है।

* धूप से बचाव: तेज धूप (UV किरणों) से बचें। बाहर निकलते समय सनस्क्रीन, टोपी या छतरी का प्रयोग करें ताकि स्किन कैंसर का खतरा न हो।

* टीकाकरण कुछ वायरस कैंसर का कारण बनते हैं। डॉक्टर की सलाह पर Hepatitis B और HPV (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) के टीके जरूर लगवाएं।

* प्रदूषण और रेडिएशन: औद्योगिक रसायनों और अनावश्यक रेडिएशन (जैसे बार-बार एक्स-रे) के संपर्क में आने से बचें।

5. नियमित जांच कैंसर का इलाज तभी सबसे प्रभावी होता है जब उसका पता शुरुआती चरण में चल जाए।

* सेल्फ एग्जामिनेशन: अपने शरीर में होने वाले किसी भी नए बदलाव, गांठ या पुराने तिल के रंग बदलने पर ध्यान दें।

* रूटीन चेकअप: 40 की उम्र के बाद महिलाओं के लिए मैमोग्राफी और पुरुषों के लिए प्रोस्टेट कैंसर की जांच जैसे नियमित टेस्ट करवाते रहें।

याद रखें: कैंसर से डरना नहीं, बल्कि लड़ना और उससे बचना जरूरी है। बचाव ही उपचार से बेहतर है की बात यहां पूरी तरह सटीक बैठती है।

वर्ल्ड कैंसर डे

पिंकी कुंडू

वर्ल्ड कैंसर डे हर साल 4 फरवरी को मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य मकसद कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाना, बचाव के तरीके बताना और कैंसर के मरीजों को साइकोसोशल सपोर्ट देना है।

1. मकसद और महत्व

* जागरूकता कैंसर के लक्षणों, कारणों और बचाव के बारे में सही जानकारी समाज तक पहुंचाना।

* जल्दी डायग्नोसिस का महत्व यह विश्वास पैदा करना कि अगर शुरुआती स्टेज में पता चल जाए तो कैंसर पूरी तरह से ठीक हो सकता है।

* भेदभाव खत्म करना कैंसर के मरीजों के लिए दया, सम्मान और समान इलाज की कोशिश करना।

2. 2024-2026 के लिए ग्लोबल थीम "केयर गैप को कम करना"

* इलाज में गैप को कम करना गरीब और अमीर, गांव और शहर के बीच कोई फर्क किए बिना

* हर व्यक्ति को सही, समय पर और सस्ता इलाज मिलना चाहिए

* यह इस थीम का मुख्य मैसेज है।

3. कैंसर के मुख्य कारण तंबाकू, सिगरेट, गुटखा और शराब का सेवन

* बदला हुआ लाइफस्टाइल और जंक फूड का ज्यादा सेवन

* एक्सरसाइज की कमी और मोटापा

* लगातार प्रदूषण और नुकसानदायक केमिकल के संपर्क में रहना

4. हम क्या कर सकते हैं?

* रेगुलर चेक-अप उम्र के हिसाब से और डॉक्टर की सलाह पर कैंसर की स्क्रीनिंग करवाएं।

* नशा न करें तंबाकू और शराब से पूरी तरह दूर रहें।

* हेल्दी डाइट अपनी डाइट में फल, सब्जियां, हरी पत्तेदार सब्जियां और नैचुरल खाना शामिल करें।

* एक्टिव लाइफस्टाइल हर दिन कम से कम 30 मिनट टहलें/एक्सरसाइज करें।

कैंसर सिर्फ एक बीमारी नहीं है, लेकिन इससे लड़ना हिम्मत, सन्न और उम्मीद का सफर है। सही जानकारी + समय पर इलाज = सुरक्षित भविष्य



की सलाह पर कैंसर की स्क्रीनिंग करवाएं।

* नशा न करें तंबाकू और शराब से पूरी तरह दूर रहें।

* हेल्दी डाइट अपनी डाइट में फल, सब्जियां, हरी पत्तेदार सब्जियां और नैचुरल खाना शामिल करें।

* एक्टिव लाइफस्टाइल हर दिन कम से कम 30 मिनट टहलें/एक्सरसाइज करें।

कैंसर सिर्फ एक बीमारी नहीं है, लेकिन इससे लड़ना हिम्मत, सन्न और उम्मीद का सफर है। सही जानकारी + समय पर इलाज = सुरक्षित भविष्य

प्रोटीन की कमी और कैंसर : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

प्रोटीन की कमी सीधे तौर पर कैंसर उत्पन्न नहीं करती, लेकिन यदि लंबे समय तक शरीर को पर्याप्त प्रोटीन न मिले, तो यह शरीर में ऐसे हालात पैदा कर सकती है जो कैंसर के विकास और उसकी प्रगति को आसान बना देते हैं।

प्रोटीन की कमी किस प्रकार कैंसर के जोखिम को बढ़ा सकती है

1. प्रतिरक्षा तंत्र की कमजोरी (Weakened Immune Surveillance)

शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को निम्नलिखित बनाने के लिए प्रोटीन की आवश्यकता होती है:

एंटीबाडी टी-कोशिकाएँ (T-cells) नैचुरल किलर कोशिकाएँ (NK cells)

जब शरीर में प्रोटीन की कमी होती है, तब प्रतिरक्षा तंत्र अक्षम या पूर्व-कैंसर कोशिकाओं को पहचानने और नष्ट करने में असमर्थ हो जाता है।

* परिणामस्वरूप, परिवर्तित (mutated) कोशिकाओं को अविनाशित रहने और बढ़ने का अवसर मिल जाता है।

2. डीएनए मरम्मत में बाधा (Impaired DNA Repair)

डीएनए की मरम्मत करने वाले अधिकांश एंजाइम प्रोटीन से बने होते हैं। प्रोटीन की कमी से:

डीएनए क्षति की मरम्मत घट जाती है

आनुवंशिक उत्परिवर्तन (mutations) जमा होने लगते हैं * अधिक उत्परिवर्तन का अर्थ है कैंसर का अधिक खतरा।



विगाड़ती है इससे शरीर में हल्की लेकिन लगातार बनी रहने वाली सूजन उत्पन्न हो सकती है, जिसे कैंसर-उत्प्रेरक वातावरण माना जाता है।

4. हार्मोनल और चयापचयी असंतुलन

कैंसर की कमी से निम्नलिखित हार्मोन प्रभावित होते हैं:

इंसुलिन IGF-1

तनाव हार्मोन (जैसे कॉर्टिसोल) इनका असंतुलन कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि को बढ़ावा दे सकता है।

5. पहले से मौजूद कैंसर में खराब परिणाम

कैंसर से ग्रस्त रोगियों में प्रोटीन की कमी: कैंसर की प्रगति (मांसपेशियों का तेजी से क्षय) को बढ़ाती है

(carcinogen) की तरह कार्य नहीं करती केवल अधिक प्रोटीन लेना कैंसर से सुरक्षा की गारंटी नहीं है

कैंसर एक बहु-कारक रोग है — जिसमें आनुवंशिकता, पर्यावरण, जीवनशैली और पोषण सभी की भूमिका होती है।

संतुलित दृष्टिकोण (Balanced Perspective)

बहुत कम प्रोटीन → शरीर की रक्षा प्रणाली कमजोर

अत्यधिक प्रोसेस्ड या लाल मांस → कुछ कैंसर का जोखिम बढ़ा सकता है

पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण प्रोटीन → प्रतिरक्षा और कोशिका मरम्मत को मजबूत करता है

उत्तम प्रोटीन स्रोत दालें, चना, राजमा अंडा, दूध, दही, पनीर मछली सोया, मूंगफली, मेवे और बीज

भारत में व्यापक सूक्ष्म-पोषक तत्वों की कमी: एक मूक स्वास्थ्य संकट

भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है, लेकिन इसके भीतर एक

गंभीर और अक्सर अनदेखा किया जाने वाला स्वास्थ्य संकट छिपा हुआ है — **विटामिन D, विटामिन B12, प्रोटीन और कैल्शियम की व्यापक कमी।**

यह समस्या केवल गरीब या कुपोषित वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि शहरी, शिक्षित और आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग भी इससे उतना ही प्रभावित है।

1. विटामिन D की कमी — धूप के देश में एक विडंबना

भारत जैसे धूप-प्रधान देश में विटामिन D की कमी होना अपने आप में चौकाने वाला तथ्य है।

अनेक वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार 70% से 90% भारतीयों में विटामिन D का स्तर सामान्य से कम है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में।

बड़े पैमाने पर किए गए विश्लेषण (जैसे Tata 1mg के 2.2 लाख से अधिक लोगों के डेटा) बताते हैं कि लगभग 75-80% वयस्कों में विटामिन D की कमी पाई गई, और सबसे अधिक प्रभावित वर्ग 25 वर्ष से कम आयु के युवा हैं।

इसके प्रमुख कारण: इनडोर जीवनशैली: दफ्तरों में लंबे समय तक रहना, ऊँची इमारतों में रहना, स्क्रीन-आधारित जीवन।

वायु प्रदूषण: UVB किरणों को रोक देता है, जो त्वचा में विटामिन D बनने के लिए आवश्यक है।

गहरी त्वचा का रंग और पारंपरिक वस्त्र, जिससे त्वचा पर धूप कम पड़ती है।

आहार में कमी: मछली, अंडा, फोर्टिफाइड दूध जैसे प्राकृतिक स्रोतों का सीमित सेवन।

स्वास्थ्य पर प्रभाव: विटामिन D केवल हड्डियों तक सीमित नहीं है। इसकी कमी से: ऑस्टियोपोरोसिस और रिकेट्स मांसपेशियों की कमजोरी, थकान रोग-प्रतिरोधक क्षमता में कमी अवसाद, मधुमेह, हृदय रोग

कुछ प्रकार के कैंसर का जोखिम तक बढ़ जाता है।



2. विटामिन B12 की कमी — व्यापक लेकिन उपेक्षित विटामिन B12 की कमी भारत में स्थानिक (Endemic) बन चुकी है।

विभिन्न शोधों के अनुसार 40% से 70% भारतीयों में B12 की कमी पाई जाती है।

सीमांत (borderline) मामलों को जोड़ने पर यह आँकड़ा 60-70% तक पहुँच जाता है।

शहरी पेशेवरों पर किए गए एक अध्ययन में 57% पुरुष और लगभग 50% महिलाएँ B12 की कमी से ग्रस्त पाई गईं।

इतनी व्यापक क्यों है यह समस्या? आहार कारण: विटामिन B12 मुख्यतः पशु-आधारित खाद्य पदार्थों (मांस, मछली, अंडा) में पाया जाता है।

भारत में बड़ी आबादी शाकाहारी है, जिससे प्राकृतिक B12 का सेवन बहुत कम हो जाता है।

अवशोषण की समस्या: पाचन संबंधी रोग, उम्र बढ़ना और कुछ दवाओं का लंबे समय तक सेवन B12 के अवशोषण को बाधित करता है।

इसके गंभीर प्रभाव: एनीमिया (खून की कमी) अत्यधिक थकान याददाश्त और आक्रामता में कमी अवसाद हाथ-पैरों में झुनझुनी या सुन्नता लंबे समय तक कमी रहने पर स्थायी तंत्रिका क्षति

आधुनिक जीवनशैली ने हमें धूप और शारीरिक गतिविधि दोनों से दूर कर दिया है।

आहार संबंधी आदतें शाकाहार प्रधान आहार + कम फोर्टिफाइड भोजन = B12 और प्रोटीन की कमी।

जागरूकता और जांच की कमी अधिकांश लोग तब तक जांच नहीं कराते जब तक लक्षण गंभीर न हो जाएँ।

नीतिगत कमी नमक में आयोडीन की तरह विटामिन D और B12 के लिए कोई राष्ट्रीय फोर्टिफिकेशन नीति अभी प्रभावी रूप से लागू नहीं है।

6. हालिया रुझान और प्रयास स्वास्थ्य विशेषज्ञ अब इसे "मूक महामारी" कह रहे हैं।

बड़े स्तर पर स्क्रीनिंग, जन-जागरूकता और फोर्टिफिकेशन कार्यक्रमों की माँग बढ़ रही है।

मीडिया और अकादमिक जगत में समय पर पहचान, संतुलित आहार और सुरक्षित सप्लीमेंटेशन पर जोर दिया जा रहा है।

7. सारांश (Key Takeaways)

पोषक तत्व भारत में अनुमानित कमी मुख्य कारण प्रमुख प्रभाव विटामिन D 70-90% शाकाहार

कम धूप, प्रदूषण कमीजोर हड्डियाँ, थकान विटामिन B12 40-70% शाकाहार

एनीमिया, तंत्रिका क्षति प्रोटीन / कैल्शियम व्यापक कमी आहार गुणवत्ता

मांसपेशी व हड्डी कमजोरी व्यक्तिगत स्तर पर क्या किया जा सकता है?

* समय-समय पर रक्त जांच कराएँ * रोजाना 15-20 मिनट सुरक्षित धूप लें * आहार में प्रोटीन और फोर्टिफाइड खाद्य पदार्थ शामिल करें * डॉक्टर की सलाह से सप्लीमेंट लें।

धर्म अध्यात्म



पिकी कुंडू

घर की सुरक्षा भैरव के बिना अधूरी मानी जाती है।

अनजानी रुकावटें या भारीपन बना रहता है, वहाँ बटुक भैरव की उपासना से वातावरण धीरे-धीरे हल्का होने लगता है।

* बटुक भैरव की एक विशेषता यह भी है कि वे माँ काली के साथ चलते हैं।

* जहाँ माँ काली संहार करती हैं, वहीं बटुक भैरव साधक की रक्षा करते हैं।

* इसीलिए जिन लोगों को लगता है कि वे हर उपाय करके भी कहीं न कहीं भटक रहे हैं, उन्हें बार-बार अलग-अलग जगहों पर जाना पड़ रहा है, उनके लिए भैरव की शरण बहुत स्थिरता देती है।

* भैरव को हारने वाला नहीं कहा जाता — जो एक बार भैरव की शरण में आ गया, उसे फिर इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं पड़ती।

बटुक भैरव से जुड़ा एक अत्यंत प्रभावशाली शाबर मंत्र भी होता है, लेकिन शाबर मंत्र साधारण जप नहीं होते। उनके अपने नियम, मर्यादा और विधि होती हैं। उस साधना के लिए प्राण-



घर का बंधन बटुक भैरव से

प्रतिष्ठित रुद्राक्ष माला की आवश्यकता होती है, जिससे जप किया जाता है — यह बात पहले से स्पष्ट रहनी चाहिए।

जो लोग अपने घर की सुरक्षा चाहते हैं, मन का डर खत्म करना चाहते हैं और जीवन में स्थिरता लाना चाहते हैं, उनके लिए बटुक भैरव की शरण एक बहुत गहरा समाधान है।

रात्रि सूक्तम् — रात की अशांति, डर और अनिद्रा के लिए दुर्गा सप्तशती का उपाय

पिकी कुंडू

बहुत से लोग बार-बार पूछते हैं — रात में मन धक्का जाता है, नींद नहीं आती, अजीब-सी बेवैबी रहती है, या बिना कारण उठ गइसुस होता है। ऐसी स्थिति के लिए दुर्गा सप्तशती (देवी गोलम्ब) में एक बहुत गहरा और सुरक्षित स्तोत्र आता है — रात्रि सूक्तम्।

रात्रि सूक्त दुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में आता है। यहाँ देवी को रात्रि के रूप में पुकारा गया है — एक ऐसी शक्ति के रूप में जो रात के समय सृष्टि को ढकती है,

ननुष्य को विप्रान देती है और भय, अशांति व अज्ञान से रक्षा करती है। दुर्गा सप्तशती में रात्रि देवी को केवल अंधकार नहीं माना गया, बल्कि एक सतत देवी - तत्व बताया गया है — जो नींद देती है, रात में दिक्कत वाली अशांत शक्तियों को नियंत्रित करती है और साधक को सुरक्षा प्रदान करती है।

यह क्यों काम करता है? रात का समय मन के अकर्मण्य का समय होता है।

दिन में जो बातें दब जाती हैं — डर, घिंटा, स्मृतिवर्षी — वही रात में उभरती हैं।

रात्रि सूक्त का पाठ या श्रवण मन को यह संकेत देता है कि "अब देवी-शक्ति मेरी रक्षा में है।"

दुर्गा सप्तशती की यह रचना ध्वनि और भाव — दोनों स्तर पर काम करती है।

इसकी ध्वनि-संयोजना से सांस की गति धीमी होती है, मन शांत होता है और शरीर नींद की अवस्था में प्रवेश करने लगता है।

कैसे करें? — सरल तरीका रात को सोने से ठीक पहले — अग्रपद संकटें, तो एक बार रात्रि सूक्त का पाठ करें। अग्र संस्कृत पढ़ना कठिन लगे, तो मोबाइल में इसका शुद्ध पाठ वार्ता कर शांति से सुन लें।

कोई कल्पना, कोई जप-संख्या या कठिन नियम नहीं। बस बिरतर पर लेटकर या बैठकर सुनें और मन में इतना भाव रखें — "मैं मेरी रक्षा कर रही हूँ।"

बहुत से लोगों ने अनुभव किया है कि कुछ ही दिनों में — रात का डर कम होता है, नींद गहरी होने लगती है, और बेवैबी या नकारात्मक सपने घटने लगते हैं।

यह विशेष रूप से उपयोगी है उन लोगों के लिए

* — जिन्हें रात में नींद नहीं आती

* — जिन्हें सोते समय धक्काटप या उठ लगता है

* — जिन्हें लगता है रात में नकारात्मकता बढ़ जाती है

* — जिनका मन रात में बहुत ज्यादा सक्रिय हो जाता है

यह कोई आक्रामक साधना नहीं है। यह दुर्गा सप्तशती का रक्षात्मक और शांत अध्याय है, जिसे कोई भी कर सकता है।



तंत्रोक्त रात्रि सूक्त देवी का वरदान

पिकी कुंडू

निम्न मन्त्र की सिद्धि के लिए * किसी भैरव मन्दिर या शिव मन्दिर में मंगलवार या शनिवार के दिन 11 बजे रात्रि के बाद पूरब या उत्तर दिशा में मुंह करके लाल या काला आसन लगाकर पहले भैरव देव की षोडशोपचार पूजा करें।

* इसके बाद गुड़ से बनी खीर, शक्कर नैवेद्य अर्पण करें

* फिर रुद्राक्ष माला से 1008 बार निम्न मन्त्र का जप करके भैरव देव को दाहिने हाथ में जप-समर्पण करें।

* यह प्रयोग 21 दिन लगातार करना है।

* 21वें दिन जप पूर्ण होते ही भैरव देव प्रत्यक्ष हो जाते हैं, तुरंत लाल कनेर के फूल की माला भैरव देव को पहनाकर आशीर्वाद माँग लें।

मन्त्र: — "ॐ रिं रिं रिं काला भैरवो दृश्यं स्वाहा। ॐ क्रं क्रं काल प्रकटय प्रकटय स्वाहा। रिं रिं रिं काला भैरव उरु रक्त जहां दर्शों। वर्षे रक्त घटा आदि शक्ति। सत मन्त्र-मन्त्र-तंत्र सिद्धि परायणा रह-रह। रूद्र, रह-रह, विष्णु रह-रह, ब्रह्म रह-रह। बेताल रह-रह, कंकाल रह-रह, रं रण-रण रिं रिं काला सब भक्षण हूँ, फुरो मन्त्र। महेश वाचा की आज्ञा फट कंकाल माई को आज्ञा। ॐ हूँ चोहरिया वीर-पाहो, शत्रु ताहो भक्ष्य मैद आतुं फिरा तौ क्रोधाश भैरव फारि तौरि डारें। फुरो मन्त्र, कंकाल चण्डी का आज्ञा। रिं रिं काला संहार कर्म कर्ता महा संहार पुत्र। 'अमुं' गृहण-गृहण, मक्ष-भक्ष हूँ। मोहिनी-मोहिनी बोलसि, माई मोहिनी। मेरे चउआन के डारनु माई। मोहूँ समरों गाउ। राजा मोहूँ, प्रजा मोहूँ, माहूँ मन्त्र गहिरा। मोहिनी चाहिनी चाहि, माथ नवई। पाहि सिद्ध गुरु के वन्द पाइ जस दे कालि का नाश होता है। इसकी सिद्धि से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा श्री भैरवजी की कृपा बनी रहती है। इस मन्त्र से झाड़ने पर सभी व्याधियों का नाश होता है। प्रयोग 2 - 41 दिनों तक किसी शिव मंदिर या भैरव मंदिर में भैरव की पंचोपचार पूजा करने के बाद उड़के के बड़े और मध का भोग लगाएं। भैरव देव प्रसन्न होकर भक्त की सब मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। मन्त्र: — "आद भैरों, जुगाद भैरों, भैरों हैं सब भाई। भैरों ब्रह्मा, भैरों विष्णु भैरों ही भोला साईं भैरों देवी, भैरों सब देवता, भैरों सिद्ध भैरों नाथ, गुरु, भैरों पीर, भैरों ज्ञान, भैरों ध्यान भैरों योग-वैराग। भैरों बिन होय नारा भैरों बिन बजे ना नाद। काल भैरों, विकराल भैरों। भोर भैरों, अधोर भैरों। भैरों की कोई ना जाने सार। भैरों की महिमा अपरम्पार। श्वेत वस्त्र, श्वेत तजधारी। हथ में मुद्गर, श्वात की सवारी। सार की जंजीर, लोहे का कड़ा। जहां सिमरें, भैरों बाबा हाजिर खड़ा। चले मन्त्र, फुरे तमाशा। देखा आद भैरों। तरे इल्म चुरे का तमाशा ॥" प्रयोग 3 — भैरव जी के चित्र या मूर्ति के सम्मुख दीप, धूप, गुग्गुलु देकर भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। पूजा के

भैरव शाबर मन्त्र प्रयोग

राजा मेरे राज से जाय। प्रजा मेरे दूध-पूत से जाय। जोगी मेरे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म वाचा, चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥

प्रयोग 5 — * निम्न भैरव मन्त्र शत्रु पीड़ा, वशीकरण, मोहन, आकर्षण में अचुक प्रयोग है।

* इस मन्त्र का अनुष्ठान शनि या रविवार से प्रारम्भ करना चाहिए।

* एक तिकोना पत्थर लेकर उसे एकांत कमरे में स्थापित करके उसके ऊपर तेल-सिंदूर का लेप करें।

* नारियल और पान भेंट में चढ़ाएं। * नित्य सरसों के तेल का दीपक अखंड जलाएं।

* नित्य 27 बार 40 दिन तक मन्त्र का जप करके कपूर, केसर छबीला, लौंग, छार की आहुति देनी चाहिए।

* भोग में बाकला, बाटी रखनी होती है।

* जब भैरव दर्शन दें तो डरे नहीं, भक्तिपूर्वक प्रणाम करके उड़के पकौड़े, बेसन के लड्डू, गुड़ से बनी खीर बलि में अर्पित करें।

* मन्त्र में वर्णित सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

* मन्त्र: — "ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ गुरु, ॐ कार, ॐ गुरु भूमसान, ॐ गुरु सत्य गुरु।

* सत्य नाम काल भैरव। * कामरू जटा चार पहर खोले चौपाटा।

* बैठे नगर में। सुमरों तोय। दृष्टि बांध दे सबकी।

* मोय हनुमान बसे हथेली। * भैरव बसे कपाल। * नरसिंह जी को मोहिनी, * मोहे सकल संसार।

* भूत मोहूँ, प्रेत मोहूँ, जिन्द मोहूँ, मसान मोहूँ।

* घर का मोहूँ, बाहर का मोहूँ। वम रक्कस मोहूँ, कोड़ा मोहूँ, अघोरी मोहूँ, दूती मोहूँ, दुमनी मोहूँ, नगर मोहूँ, घेरा मोहूँ, जादू-टोना मोहूँ, डकनी मोहूँ, संकनी मोहूँ, रात का बटोही मोहूँ, बाट का बटोही मोहूँ, पनघट की पतिहारी मोहूँ, इंद्र का इंद्रासन मोहूँ, गद्दी बैठा राजा मोहूँ, गद्दी बैठा बणिषा मोहूँ, आसन बैठा योगी मोहूँ।

और को देख जले भुने। मोय देव के पायन परे। जो कोई कोटे मारे वाचा, अंधा कर, लूला कर, सिद्धी वारा कर, अग्नि में जलाय।

धरी को बताए दे, गद्दी को बताय दे, हाथ को बताए दे, गांव को बताए दे, खोए को मिलाए दे, रूठे को मनाए दे, दुष्ट को सताए दे, मित्रों को बढ़ाए दे। वाचा छोड़ कुवाचा चले, तो माता क चौखा दूध हराम करे। हनुमान आण। गुरुन को प्रणाम। ब्रह्मा, विष्णु साख भर, उनको भी सलाम।

लोना चामरी की आण, माता गौरा पार्वती महादेव जी की आण। गुरु गोरखनाथ की आण, सीता रामचंद्र की आण मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। गुरु के वचन से चले, तो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

प्रयोग 6 — यह भैरव प्रयोग किसी अटके हुए कार्य में सफलता प्राप्ति हेतु है। प्रयोग रविवार से प्रारम्भ करके 21 दिन तक मूक्तिका की मणियों की माला से नित्य 28 बार जप करें।



जप करने से पहले भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। जप के बाद गुड़ व तेल, उड़के का दही - बटा चढ़ाएं और पूजा से उठने के बाद उसे काले कुत्ते को खिला दें।

मन्त्र: — "ॐ नमो भैरुनाथ, काली का पुत्र हाजिर होके, तुम मेरा कारज करो तुरत। कमर विराज मस्तंग लंगोट, घूबर माल। हाथ बिराज डमरू खप्पर त्रिशूल। मस्तक विराज तिलक सिंदूर। शीश विराज जटाजूट, गल विराज नादे जनेऊ। ॐ नमो भैरुनाथ काली का पुत्र! हाजिर होके तुम मेरा कारज करो तुरत। नित उठ करे आदेश-आदेश ॥" प्रयोग 7 — निम्न मन्त्र नवरात्री, दीपावली या सूर्यग्रहण में सिद्ध करें। त्रिखुटा चौका देकर, दक्षिण की ओर मुंह करके, मन्त्र का जप 1008 बार करें। तब लाल कनेर के फूल, लड्डू, सिंदूर, लौंग, भैरव देव को चढ़ावें। जप से पहले भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। अखंड दीपक निरंतर जलता रहना चाहिए। जप के दशकों का हवन छार, लौंग छबीला, कपूर, केसर से करें। जब भैरव जी भयंकर रूप में दर्शन दें तो डरे नहीं। तत्काल फूल की माला उनके गले में डालकर बेसन का लड्डू उनके आगे रखकर वर मांग लेना चाहिए। श्री भैरव दर्शन न दें तो भी कार्य सिद्धि अवश्य होगी। दर्शन न मिले तो उनकी मूर्ति को माला पहनाकर लड्डू वही रख दें। अभीष्ट कार्य कुछ ही दिनों में हो जाएगा। मन्त्र: — "ॐ काली केकाली महाकाली के पुत्र, कंकाल भैरव! हुकम हाजिर रहे, मेरा भेजा काल करे। मेरा भेजा रक्षा करे। आन बाँधू, बान बाँधू। चलते फिरते के औँसान बाँधू। दसों स्वर बाँधू। नौ नाड़ी बहतर कोटा बाँधू। फूल में भेजूँ, फूल में जाए। कोठे जीव पड़े, थर-थर लाँपे। हल-हल हल्ले, गिर-गिर पड़े। उठ-उठ भगे, बक-बक बकै। मेरा भेजा सवा घड़ी, सवा पहर, सवा दिन सवा माह, सवा बरस को बावला न करे तो माता काली की शंसा पर पग धरे। वाचा चुके तो ऊमा सुखे। वाचा छोड़ कुवाचा करे तो धोबी की नाद में, चमार के कूड़े में पड़े। मेरा भेजा बावला न करे, तो रूख के तंत्र से अग्नि की

ज्वाला कढ़ै। सिर की लटा दूट भू में गिरे। माता पार्वती के चीर पर चोट पड़ै। विना हुकम नहीं मारता हो। काली के पुत्र, कंकाल भैरव! फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम, आदेश गुरु को ॥" प्रयोग 8 — निम्न मन्त्र होली, दीपावली, शिवरात्री, नवरात्रा या ग्रहण के समय लाल मिट्टी से चौका देकर अरंडी (एरंड) की सूखी लकड़ी पर तेल का हवन करें। जब लौ प्रज्वलित हो तो उसी प्रज्वलित लौ को चमेली के फूलों की माला पहना के सिंदूर, मदिरा, मगौड़ी, इत्र, पान चढ़ाकर फिर गुग्गुलु से हवन करें। उपरोक्त क्रिया करने से पहले 1008 बार निम्न मन्त्र का पहले जप कर लें। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रारम्भ में भैरव देव का पंचोपचार पूजन करें। प्रत्येक वर्ष नवरात्र या दीपावली में शक्ति बढ़ाने के लिए 108 बार मन्त्र का जप कर दिया करें। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहां 'मेरा' कहना लिखा है, वहां कार्य का नाम लें। मन्त्र: — "भैरों उचके, भैरों कूड़े। भैरों सोर मचावे। मेरा कहना ना करे, तो कालिका को पूत न कहावे। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥" प्रयोग 9 — निम्न मन्त्र का अनुष्ठान 21 दिन का है, साधक श्रमशान में भैरव देव का पंचोपचार पूजन करने के उपरांत 10 माला का जप नित्य 7 दिनों तक करें, फिर 7वें दिन मध, मांस की आहुति दें, फिर चौराहे में बैठकर 10 माला जप नित्य 7 दिन करें, 7वें दिन दही-बाड़ा, मध, मांस की आहुति दें, उसके बाद घर के एकांत कमरे में 7 दिन नित्य 10 माला का जप करें और 7वें दिन दही-बाड़ा, बाकला-बाटी और मध, मांस की आहुतियां दें, इससे भैरव जी प्रसन्न होकर साधक की सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। मन्त्र: — "ॐ भैरों ऐंडी भैरों मैडी। भैरों सबका दूता देवी का दूत, देवता का दूत, गुरु का दूत, पीर का दूत, नाथों का दूत, पीरों का दूत, भैरों छंडिया कहाए। जहां सिमरें तहां आए। जहां भेजूं, तहां जाए। चले मन्त्र फुरे वाचा। देखूँ छंडिया भैरों, तरे इल्म का तमाशा ॥" प्रयोग 10 — होली, दिवाली अथवा ग्रहण के समय मन्त्र का एक हजार जप करें। किसी को ओपरी (तान्त्रिक आभिचारिक) बाधा हो, तो लौंग,

इलायची और विभूति बनाकर दे। लाभ होगा। मन्त्र: — "काला भैरों कपली जटा। हथ वराड़ा, कुन्द वडा। काला भैरों हाजिर खड़ा। चाम की गुत्थी, लौंग की विभूत। लगे लगाए की करे भस्मा भूत। काली बिल्ली, लोहे की पाखर, गुर सिखाए अढ़ाई अखर। अढ़ाई अखर गए गुरों के पास, गुरों बुलाई काली। काली का लगा चक्कर। भैरों का लगा थपड़। लगा-लगाया, भेजा-भेजाया, सब गया सत समुद्र-पार ॥" प्रयोग 11 — निम्न मन्त्र की साधना 40 दिन की है। यह साधना शुद्ध जल से स्नान करके, स्वच्छ वस्त्र धारण करके शनिवार से प्रारम्भ करें। पहले भैरव देव की पंचोपचार पूजा करके एक मिट्टी के घड़े के ऊपरी हिस्से को तोड़कर नीचे का जो आधा और ज्यादा भाग रहे, उस हिस्से में आग जलाएं, उसके पास एक बाजू में सरसों के तेल का दीपक जलाकर रखें और दूसरे बाजू में गुग्गुलु की धूप जलाएं और चढ़ाकर फिर गुग्गुलु से हवन करें। स्व-निम्न मन्त्र की एक माला का जप करें। जप के बाद भोग को अग्नि में डाल दें, प्रतिदिन भोग आदि देकर जप करते रहें। प्रत्येक आठवें दिन भोग सामग्री का विशेष हवन 10 बार अलग से किया कीया करें तो मन्त्र सिद्ध होता है और साधक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। मन्त्र: — "ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥" प्रयोग 12 — भैरव शत्रु-संहारक शाबर मन्त्र — रात्रि को दस बजे के बाद कड़ुए तेल का दीपक जला कर बैठें। सामने भैरव की प्रतिमा या चित्र हो। मन्त्र पढ़कर एक नींबू खड़ा काटे। १२० बार। ऐसा ही ग्यारह दिनों तक करें। १२वें दिन निम्न मन्त्र का पहले जप कर लें। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रारम्भ में भैरव देव का पंचोपचार पूजन करें। प्रत्येक वर्ष नवरात्र या दीपावली में शक्ति बढ़ाने के लिए 108 बार मन्त्र का जप कर दिया करें। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहां 'मेरा' कहना लिखा है, वहां कार्य का नाम लें। मन्त्र: — "भैरों उचके, भैरों कूड़े। भैरों सोर मचावे। मेरा कहना ना करे, तो कालिका को पूत न कहावे। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥" प्रयोग 13 — भैरव शत्रु-संहारक शाबर मन्त्र — रात्रि को दस बजे के बाद कड़ुए तेल का दीपक जला कर बैठें। सामने भैरव की प्रतिमा या चित्र हो। मन्त्र पढ़कर एक नींबू खड़ा काटे। १२० बार। ऐसा ही ग्यारह दिनों तक करें। १२वें दिन निम्न मन्त्र का पहले जप कर लें। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रारम्भ में भैरव देव का पंचोपचार पूजन करें। प्रत्येक वर्ष नवरात्र या दीपावली में शक्ति बढ़ाने के लिए 108 बार मन्त्र का जप कर दिया करें। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहां 'मेरा' कहना लिखा है, वहां कार्य का नाम लें। मन्त्र: — "भैरों उचके, भैरों कूड़े। भैरों सोर मचावे। मेरा कहना ना करे, तो कालिका को पूत न कहावे। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥" प्रयोग 14 — भैरव शत्रु-संहारक शाबर मन्त्र — रात्रि को दस बजे के बाद कड़ुए तेल का दीपक जला कर बैठें। सामने भैरव की प्रतिमा या चित्र हो। मन्त्र पढ़कर एक नींबू खड़ा काटे। १२० बार। ऐसा ही ग्यारह दिनों तक करें। १२वें दिन निम्न मन्त्र का पहले जप कर लें। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। प्रारम्भ में भैरव देव का पंचोपचार पूजन करें। प्रत्येक वर्ष नवरात्र या दीपावली में शक्ति बढ़ाने के लिए 108 बार मन्त्र का जप कर दिया करें। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो तो जहां 'मेरा' कहना लिखा है, वहां कार्य का नाम लें। मन्त्र: — "भैरों उचके, भैरों कूड़े। भैरों सोर मचावे। मेरा कहना ना करे, तो कालिका को पूत न कहावे। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥" प्रयोग 15 — भैरव जी की चौकी मूकने का मन्त्र — उक्त चौकी मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर एक घेरा खींचें तो किसी भी प्रकार का डर नहीं रहता। स्व-रक्षा और दूसरों द्वारा किए गए अभिचार कर्म के लिए यह उपयोगी मन्त्र है। मन्त्र: — "चेत सूना ज्ञान, औंधी खोपड़ी मरघटियां मसान, बाँध दे बाबा भैरों की आन ॥" प्रयोग 16 — अरिष्ट-निवारक-भैरव मन्त्र — उक्त मन्त्र का दस हजार जप करने से अरिष्टों की शान्ति होती है। शान्ति-करने सम्बन्धी यह उत्तम मन्त्र है। मन्त्र: — "ॐ श्रौं श्रौं स्वाहा ॥" प्रयोग 17 — भय-निवारक भैरव मन्त्र — 5 हजार जप से उक्त मन्त्र की सिद्धि होती है। बाद में जब किसी भी प्रकार का भय हो, तब उक्त मन्त्र का जप करें। इससे भय दूर होता है। मन्त्र: — "ॐ ह्रीं भैरव — भैरव भयकर-हर मां, रक्ष-रक्ष हूँ फट स्वाहा ॥" प्रयोग 18 — शिशु-बाधा-निवारक भैरव मन्त्र — ५ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सुरक्षा के लिए उक्त मन्त्र अमोघ है। रोग, बाधा, टोना या टोटका आदि से पीड़ित बच्चों को बलाओं से बचाने के लिए बच्चे की माँ के बाँए पैर के अँगूठे को एक छोटे ताप-पत्र में रखवाकर धोएं। धोए हुए जल के ऊपर ११० बार निम्न मन्त्र का जप कर उसे अभिमन्त्रित करें। इस अभिमन्त्रित जल से उक्त मन्त्र का जप करते हुए बच्चे को कुश या पान के पत्र से छीटा करें। इससे बच्चा स्वस्थ हो जाता है। यदि एक बार में लाभ न हो, तो ऐसा या ७ या ६ दिनों तक नित्य करें। बच्चे को आराम अवश्य होगा। मन्त्र: — "श्रीभैरवाय वं वं ह्रीं श्रौं नमः ॥" प्रयोग 19 — सर्व-विघ्न-निवारक मन्त्र मन्त्र — पहले श्री काल-भैरव जी के पास धूप-दीप-फल-फूल-नैवेद्य आदि यथा-शक्ति चढ़ाएं। फिर मन्त्र का एक माला जप करें। ऐसा तब तक करें, जब तक ध्येय-सिद्धि न हो। मन्त्र को एक कागज के ऊपर लिख कर पूजा-स्थान में रख लेना चाहिए। जिससे मन्त्र-जप में शूल न हो। मन्त्र: — "ॐ ह्रीं जं रं लं वं कं ऐं ह्रीं महा-काल भैरव सर्व-विघ्न-नाशाय हाँ फट स्वाहा ॥" प्रयोग 20 — सिद्धि-प्रदायक महा-काल भैरव जी का मन्त्र — शुभ मुहुर्त में अथवा जप आपकी राशि का चन्द्र बली हो, तब उक्त मन्त्र का २१ हजार जप करें। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में नित्य १ माला जप करता रहे, तो श्री महा-काल भैरव जी प्रसन्न होकर अभीष्ट-सिद्धि प्रदान करते हैं। जप के साथ कामनानुसार ध्यान भी करना चाहिए। मन्त्र: — "ॐ हं ङं फं ङं खं महा-काल भैरवाय नमः ॥" प्रयोग 21 — भैरव मन्त्र — भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। पूजा के

मन्त्र — "ॐ नमो काला-गोरा क्षेत्र-पाल। वामं हाथं कान्ति, जीवन हाथ कृपाल। ॐ गन्ती सूरज थम्भ प्रातः-सायं रथभं जलतो विसार शर थम्भ। कुसी चाल, पाषाण चाल, शिला चाल हो चाली, न चले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिहै। चोखा मन्त्र, ऐसा कुनी अब नार हसही ॥" जप के बाद निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए भैरव जी को नमस्कार करना चाहिए। यथा — "ह्रीं हौं नमः।" इस प्रकार साधना करने से भैरव जी सिद्ध होते हैं और साधक की सभी अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। प्रयोग 14 — श्रीभैरव-चेटक मन्त्र — निम्न नवाक्षर मन्त्र का कुल ४० हजार जप कर गो-धूल से दशांश हवन करें। १८ दिनों तक इस तरह हवन करने से भैरव जी प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। मन्त्र: — "ॐ नमो भैरवाय स्वाहा ॥" प्रयोग 15 — भैरव जी की चौकी मूकने का मन्त्र — उक्त चौकी मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर एक घेरा खींचें तो किसी भी प्रकार का डर नहीं रहता। स्व-रक्षा और दूसरों द्वारा किए गए अभिचार कर्म के लिए यह उपयोगी मन्त्र है। मन्त्र: — "चेत सूना ज्ञान, औंधी खोपड़ी मरघटियां मसान, बाँध दे बाबा भैरों की आन ॥" प्रयोग 16 — अरिष्ट-निवारक-भैरव मन्त्र — उक्त मन्त्र का दस हजार जप करने से अरिष्टों की शान्ति होती है। शान्ति-करने सम्बन्धी यह उत्तम मन्त्र है। मन्त्र: — "ॐ श्रौं श्रौं स्वाहा ॥" प्रयोग 17 — भय-निवारक भैरव मन्त्र — 5 हजार जप से उक्त मन्त्र की सिद्धि होती है। बाद में जब किसी भी प्रकार का भय हो, तब उक्त मन्त्र का जप करें। इससे भय दूर होता है। मन्त्र: — "ॐ ह्रीं भैरव — भैरव भयकर-हर मां, रक्ष-रक्ष हूँ फट स्वाहा ॥" प्रयोग 18 — शिशु-बाधा-निवारक भैरव मन्त्र — ५ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सुरक्षा के लिए उक्त मन्त्र अमोघ है। रोग, बाधा, टोना या टोटका आदि से पीड़ित बच्चों को बलाओं से बचाने के लिए बच्चे की माँ के बाँए पैर के अँगूठे को एक छोटे ताप-पत्र में रखवाकर धोएं। धोए हुए जल के ऊपर ११० बार निम्न मन्त्र का जप कर उसे अभिमन्त्रित करें। इस अभिमन्त्रित जल से उक्त मन्त्र का जप करते हुए बच्चे को कुश या पान के पत्र से छीटा करें। इससे बच्चा स्वस्थ हो जाता है। यदि एक बार में लाभ न हो, तो ऐसा या ७ या ६ दिनों तक नित्य करें। बच्चे को आराम अवश्य होगा। मन्त्र: — "श्रीभैरवाय वं वं ह्रीं श्रौं नमः ॥" प्रयोग 19 — सर्व-विघ्न-निवारक मन्त्र मन्त्र — पहले श्री काल-भैरव जी के पास धूप-दीप-फल-फूल-नैवेद्य आदि यथा-शक्ति चढ़ाएं। फिर मन्त्र का एक माला जप करें। ऐसा तब तक करें, जब तक ध्येय-सिद्धि न हो। मन्त्र को एक कागज के ऊपर लिख कर पूजा-स्थान में रख लेना चाहिए। जिससे मन्त्र-जप में शूल न हो। मन्त्र: — "ॐ ह्रीं जं रं लं वं कं ऐं ह्रीं महा-काल भैरव सर्व-विघ्न-नाशाय हाँ फट स्वाहा ॥" प्रयोग 20 — सिद्धि-प्रदायक महा-काल भैरव जी का मन्त्र — शुभ मुहुर्त में अथवा जप आपकी राशि का चन्द्र बली हो, तब उक्त मन्त्र का २१ हजार जप करें। इससे मन्त्र-सिद्धि होगी। बाद में नित्य १ माला जप करता रहे, तो श्री महा-काल भैरव जी प्रसन्न होकर अभीष्ट-सिद्धि प्रदान करते हैं। जप के साथ कामनानुसार ध्यान भी करना चाहिए। मन्त्र: — "ॐ हं ङं फं ङं खं महा-काल भैरवाय नमः ॥" प्रयोग 21 — भैरव मन्त्र — भैरव देव की पंचोपचार पूजा करें। पूजा के

प्रतिभा मंथन से निखर रही विद्यार्थियों की प्रतिभा, सही करियर चयन को मिल रही दिशा : डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 5 फरवरी। उपायुक्त श्री स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में कैम्प कार्यालय में "प्रतिभा मंथन" कार्यक्रम की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के स्कूलों में चल रहे इस महत्वपूर्ण शैक्षणिक अभियान की प्रगति पर विस्तार से चर्चा की गई तथा विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने के लिए इसे और प्रभावी बनाने पर बल दिया गया।

उपायुक्त ने कहा कि "प्रतिभा मंथन" कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को उनके कौशल, रुचि और क्षमता के अनुरूप सही करियर चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना है। उन्होंने अधिकारियों व शिक्षकों को निर्देश दिए कि विद्यार्थियों की प्रतिभा को प्रारंभिक स्तर पर पहचानकर उन्हें उचित दिशा देने का कार्य पूरी गंभीरता से किया जाए, ताकि वे भविष्य में

आत्मनिर्भर बन सकें।

बैठक में बताया गया कि पिछले तीन वर्षों से जिले में यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत झज्जर जिला के 177 स्कूलों को जोड़ा गया है, जबकि 177 स्कूलों के प्रिंसिपल और लगभग 340 शिक्षक सक्रिय रूप से इस पहल में योगदान दे रहे हैं। इस कार्यक्रम में अब तक करीब 17 हजार विद्यार्थी जुड़ चुके हैं, जिससे वे अपनी रुचि के अनुसार करियर विकल्पों के प्रति जागरूक हो रहे हैं।

उपायुक्त पाटिल ने कहा कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचानकर उन्हें सही अवसर उपलब्ध कराना भी उतना ही आवश्यक है। "प्रतिभा मंथन" जैसे प्रयास विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें लक्ष्यनिर्धारित करने में भी

सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे विद्यार्थियों का नियमित मार्गदर्शन करें और अभिभावकों को भी इस प्रक्रिया में शामिल करें, ताकि बच्चों के करियर से जुड़े निर्णय सोच-समझकर लिए जा सकें।

बैठक के दौरान कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन, करियर काउंसिलिंग सत्रों के विस्तार तथा अधिक से अधिक विद्यार्थियों तक इस पहल को पहुंचाने पर भी विचार-विमर्श किया गया। प्रशासन का लक्ष्य है कि जिले का प्रत्येक विद्यार्थी अपनी प्रतिभा के अनुरूप आगे बढ़े और सफलता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करे।

इस अवसर पर सीएमजीओ खुशी कौशल, जिला शिक्षा अधिकारी रविंद्र सिंह, मुजतबा, परनीता आमरीन, सभी खंड शिक्षा अधिकारी उपस्थित रहे।



झज्जर में आज (06 फरवरी को) उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 05। उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) द्वारा आयोजित अभियान कार्यालय में आज (06 फरवरी को) बिजली उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन किया जाएगा। सुबह 11 बजे से 01 बजे तक उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम का

आयोजन होगा। यह कष्ट निवारण फॉर्म की बैठक फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के कार्यकारी अभियंता अंशु शर्मा सरकल झज्जर की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में झज्जर क्षेत्र के बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों को झज्जर कार्यालय में सुना जाएगा। इस दौरान बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवारों की सुनवाई की जाएगी।



विशेष गहन पुनरीक्षण के तहत कर्मचारियों को दिया गया प्रशिक्षण मतदाता सूची की शुद्धता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने पर रहा जोर

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 5 फरवरी। आगामी विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मद्देनजर जिला प्रशासन द्वारा संवाद भवन, झज्जर में मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य से जुड़े बीएओ एवं सुपरवाइजरों को जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण कार्य को सुव्यवस्थित, पारदर्शी एवं त्रुटिरहित ढंग से संपन्न कराना रहा।

प्रशिक्षण सत्र में जिला के सभी सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों (प्रथम व द्वितीय), बीएओ सुपरवाइजरों तथा वृथ लेवल अधिकारियों (बीएओ) ने भाग लिया। उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन स्वप्निल रविंद्र पाटिल के मार्गदर्शन में 66 झज्जर विधान सभा

के निर्वाचक पंजीयन अधिकारी एसडीएम अंकित कुमार चौकसे की अध्यक्षता में निर्वाचन उप तहसीलदार कुलदीप एवं निर्वाचन कानूनगो मनीष ने बीएओ एवं सुपरवाइजरों को पुनरीक्षण प्रक्रिया, निर्धारित दिशानिर्देशों तथा कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वे निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरी जिम्मेदारी व सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें, ताकि प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में शामिल हो सके।

प्रशिक्षण के दौरान मतदाता सूची के अद्यतन, नए मतदाताओं के पंजीकरण, अपात्र नामों की विलोपन प्रक्रिया तथा आवश्यक प्रपत्रों के सही उपयोग संबंधी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी मार्गदर्शन दिया गया। साथ ही यह भी निर्देश



दिए गए कि पुनरीक्षण कार्य के दौरान किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए और सभी प्रक्रियाएं निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप पूरी की जाएं।

जिला निर्वाचन अधिकारी के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को आगामी तिथियों 6 फरवरी व 9 फरवरी को भी जारी रखा जाएगा, ताकि सभी

संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रभावी रूप से प्रशिक्षित किया जा सके और पुनरीक्षण कार्य को सफल बनाया जा सके। प्रशिक्षण के दौरान चुनाव कार्यालय के नायब तहसीलदार कुलदीप, कानूनगो मनीष, जूनियर प्रोग्रामर अरुण, लिपिक राहुल सहित बीएओ उपस्थित रहे।

महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में डॉ भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में आज खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन



महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने दिखाया खेल प्रतिभा का दम

बहादुरगढ़, 5 फरवरी। महिलाओं के शारीरिक व मानसिक विकास तथा उनके आत्मविश्वास को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विकास विभाग द्वारा बहादुरगढ़ में महिला खेल

प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी खेल प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। इस दौरान 100 मीटर, 300 मीटर, 400 मीटर दौड़, साइकिल रेस, डिस्कस थ्रो तथा म्यूजिकल चेयर जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विभाग की ओर से बताया गया कि यह

आयोजन महिलाओं के विकास और उनके मनोबल को बढ़ाने की दिशा में एक सराहनीय पहल है। खेल प्रतियोगिताओं को दो आयु वर्गों में आयोजित किया गया, जिसमें 18 से 30 वर्ष तथा 30 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं को शामिल किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली प्रतिभागियों को 2100 रुपये, 1100

रुपये और 750 रुपये की पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। शहरी वर्ग के 300 मीटर दौड़ में मुस्कान प्रथम, शीतल द्वितीय और अस्मिता तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ में भारती, अर्चना और वनिशा विजेता रहीं। ग्रामीण वर्ग-2 में म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता में पूनम प्रथम, कमलेश द्वितीय कृष्णा तृतीय स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर रेस में

कविता प्रथम दर्शन द्वितीय बबीता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्थान हासिल किए। कार्यक्रम के अंत में सीडीपीओ प्रियंका ने सभी विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की और कहा कि इस प्रकार के म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिताओं को आगे बढ़ाने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

अधिकारी समाधान शिविर की हर शिकायत का यथाशीघ्र करें उचित निपटारा : उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल

एक छत के नीचे सभी विभागों से संबंधित हर शिकायत के तुरंत निपटारे के उद्देश्य से आयोजित किये जा रहे समाधान शिविर



झज्जर, 5 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में प्राप्त हर शिकायत का यथाशीघ्र उचित निपटारा सुनिश्चित करें। समाधान शिविर में हर विभाग से संबंधित हर शिकायत का एक छत के नीचे तुरंत निपटारा करने का लक्ष्य रखा गया है। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविर में नागरिकों की समस्याओं की सुनवाई कर रहे थे। इस अवसर पर एसडीएम अरुण कुमार चौकसे, सीडीएम नमिता कुमारी, जिला राजस्व अधिकारी मनवीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी सुरेंद्र कुमार, नितिन बंसल बीजेपी प्रदेश संयोजक, गौरव सैनी जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा हर सोमवार व वीरवार को सुबह 10 से 12 बजे तक जिला मुख्यालय एवं बहादुरगढ़, बेरी व बादली उपमंडल मुख्यालयों पर समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। उपायुक्त पाटिल ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि वे समाधान शिविरों की शिकायतों का निपटारा करते समय संबंधित नागरिक से संवाद करें। अधिकारी नागरिक को शिकायत निपटारे के लिए विभाग द्वारा की जा रही कार्यवाही की जानकारी देकर संतुष्ट करें, ताकि शिकायत का स्थायी समाधान हो सके।

राज्य स्तरीय पशुधन प्रदर्शनी में भाग लेने का सुनहरा अवसर, झज्जर के पशुपालकों के लिए विशेष बस सुविधा

झज्जर, 5 फरवरी। कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड मेला ग्राउंड, कुरुक्षेत्र में 6 से 8 फरवरी, 2026 तक आयोजित होने वाली तीन दिवसीय 4 वीं राज्य स्तरीय पशुधन प्रदर्शनी पशुपालकों के लिए आधुनिक पशुपालन तकनीकों से रूबरू होने और उन्नत नस्ल के पशुओं को देखने का महत्वपूर्ण मंच साबित होगी। इस प्रदर्शनी में प्रदेश भर से लगभग 1500 उन्नत नस्ल के पशु विभिन्न श्रेणियों में भाग लेंगे। आयोजन का मुख्य उद्देश्य श्रेष्ठ नस्लों का प्रदर्शन कर पशुपालकों को नस्ल सुधार के लिए प्रेरित करना तथा दुग्ध उत्पादन बढ़ाकर किसानों की आय में वृद्धि करना है। यह जानकारी पशुपालन एवं डेयरी विभाग के उपनिदेशक डॉ. मनीष डबास ने देते हुए बताया कि आयोजन को सफल बनाने के लिए विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशानिर्देश जारी कर दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारी अपने-अपने क्षेत्रों में पशुपालकों से संपर्क कर उन्हें प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। साथ ही पशुपालकों से आग्रह किया कि वे अपने उत्तम नस्ल के पशुओं का विवरण संबंधित पशु चिकित्सक को समय रहते उपलब्ध कराएं और पशु प्रवेश याचिका पूर्ण करना सुनिश्चित करें।

उपनिदेशक ने बताया कि प्रदर्शनी में मुराह बैस, साहीवाल, गिर, थारपारकर, राठी व बेलाही जैसी देशी नस्ल की गायें, क्रॉस ब्रीड गाय, घोड़े, गधे, ऊंट, नाली व हिसार डेल नस्ल की भेड़, बकरी तथा गौशाला पशु शामिल होंगे। प्रदर्शनी के दौरान चर्चित सर्वश्रेष्ठ पशुओं को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा, जिससे पशुपालकों को बेहतर पशुपालन अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने बताया कि प्रदर्शनी में भाग लेने वाले पशु मालिकों को अपने साथ आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक, कैसिल चैक तथा परिवार पहचान पत्र (पीपीपी आईडी) अनिवार्य रूप से लाने होंगे। डॉ. डबास ने आगे जानकारी देते हुए बताया कि पशुपालन विभाग झज्जर द्वारा जिला के पशुपालकों को प्रदर्शनी स्थल तक ले जाने और वापस लाने के लिए प्रतिदिन 07 बसों की विशेष व्यवस्था की गई है, ताकि अधिक से अधिक पशुपालक इस राज्य स्तरीय आयोजन का लाभ उठा सकें। उन्होंने जिला के सभी पशुपालकों से प्रदर्शनी में बड़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया।

हमें अपने मन, कर्म और वचन को शुद्ध रखना चाहिए – सुनील गोयल डिंपल



संगरूर, 5 फरवरी (जगसीर लोगावाल) - जय बाबा जनक राज बजाज जी जल जीरे वालों की 22वीं वार्षिक बरसी गुरुवार को बड़ी श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाई गई। इस अवसर पर मुख्य सेवादार श्री वधावा दास जी, प्रधान मिंटू, उप प्रधान नितिन शर्मा और महासचिव अश्वनी जिंदल के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस वार्षिक बरसी के मौके पर वरिष्ठ भाजपा नेता सुनील गोयल डिंपल तथा उनके साथ एडवोकेट रजिंदर सिंगला विशेष रूप से पहुंचे और बाबा जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर दोनों अतिथियों को सम्मानित भी किया गया। भाजपा नेता सुनील गोयल डिंपल ने अपने संबोधन में कहा कि धर्म हमें आपस में जोड़ता है और श्रद्धा हमारे मन की भावनाओं को उजागर करती है। उन्होंने कहा कि हमें अपने मन, कर्म और वचन को सदैव शुद्ध रखना चाहिए।

अपनी वाह-वाह

दूसरों की आज करता है कौन परवाह, धुआधार बस बढ़ती रही जा रही वाह, दिलों में नहीं है उजाला अहम है बसा, सभी को चाहिए बस अपनी वाह-वाह।

अपनों से रूठे बैठे हैं घरों में आज लोग, लगा है बाहरी प्रशास का उन्हें गजब रोग, रिश्तों में तनातनी का शिकंजा है कसा, चला है आज ये कैसा चलन कैसा भोग।

बोलते हैं बाहर बड़े ही मिथी से भरे बोल, बजाते हैं घरों में पर तानाशाही का ढोल,

दूसरों की हार पर खूब करते हैं जलसा, भूल ही बैठे हैं पैतृक संस्कारों का मोल।

घावों पर छिड़कते जा रहे बिदास नमक, छूना चाहते हैं महत्वाकांक्षियों का फलक, मन-मस्तिष्क पर मोह ने डाला है शिकंजा, सर चढ़ी बनावटी जीवन की चमक-दमक।

मिलेंगे ऐसे उदाहरण आस-पास ही हजारों, तन-मन की स्वास्थ्य शांति में हैं जो जीरो, रआनंदर ईश्वर तो इनकी करतूतों पर हैं हँसा, बनते फिर रहे हैं फिर भी ये दुनिया में हीरों।

- मोनिका डागा आनंद

आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद रचना स्वरचित और सर्वाधिकार सुरक्षित

स्लाइट में "आपातकाल के 50 साल: भारतीय लोकतंत्र के लिए सबक" विषय पर विकसित भारत युवा संसद का आयोजन

लोगोवाल, 5 फरवरी (जगसीर सिंह)-

आपातकाल के 50 साल: भारतीय लोकतंत्र के लिए सबक विषय पर विकसित भारत युवा संसद 2026 का आयोजन संत लोगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के मैकेनिकल ब्लॉक के आई. एस. टी. ई. हॉल में सफलतापूर्वक किया गया। कार्यक्रम में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवा मन में लोकतांत्रिक जागरूकता, संवैधानिक मूल्यों और जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा देना था। इस कार्यक्रम को माई भारत (युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा फंड

किया गया था और इसमें संगरूर जिले के युवाओं ने भाग लिया, जिन्होंने भारतीय लोकतंत्र के सबसे काले अध्यायों में से एक पर सक्रिय रूप से चर्चा की। प्रतिभागियों ने आपातकाल की अवधि के ऐतिहासिक संदर्भ और लोकतांत्रिक मूल्यों और संवैधानिक सिद्धांतों की रक्षा के लिए इसके स्थायी सबकों पर प्रकाश डालते हुए जानवर्धक और विचारोत्तेजक भाषण दिए।

कार्यक्रम का समन्वय डॉ. प्रीतपाल कौर (सहायक प्रोफेसर, एस.एल.आई.ई.टी.) ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एस.एल.आई.ई.टी. के निदेशक प्रो. मणि कांत पासवान, डीन (छात्र कल्याण) प्रो. वी.के.

कुकरेजा, जिला युवा अधिकारी श्री राहुल सैनी, और एन.एस.एस. कार्यक्रम अधिकारी डॉ. तजिंदर सिंह और डॉ. योगेश वर्मा उपस्थित थे, जिन्होंने छात्रों को लोकतांत्रिक चर्चा और राष्ट्र निर्माण की पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। जूरी पैनल में प्रो. एच.आर. घटक (एस.एल.आई.ई.टी.), प्रो. ए.पी. सिंह फरवाहा (एस.एल.आई.ई.टी.), डॉ. वी.के. मीना (एस.एल.आई.ई.टी.), डॉ. नितू सेठी (प्रिंसिपल माईडन कॉलेज मलरकोटला), और श्रीमती हरजीत कौर (एसोसिएट डीन आर.आई.एम.टी विश्वविद्यालय) शामिल थे, जिन्होंने

प्रतिभागियों का मूल्यांकन सामग्री, स्पष्टता और प्रस्तुति कौशल के आधार पर किया। कार्यक्रम के समापन पर, शीर्ष 10 प्रदर्शन करने वालों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। ये विजेता चंडीगढ़ में होने वाली राज्य-स्तरीय विकसित भारत युवा संसद में जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। विकसित भारत युवा पार्लियामेंट युवाओं के लिए सार्थक बातचीत करने, भारत की लोकतांत्रिक यात्रा पर सोचने और एक मजबूत, सतर्क और विकसित भारत बनाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को फिर से पक्का करने के लिए एक शक्तिशाली मंच साबित हुआ।

पत्रिकाओं की मदद से नीट / जेईई के लिए तैयारी कैसे करें

डॉ. विजय गर्ग

नीट और जेईई जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की दौड़ में, छात्र अक्सर कोचिंग नोट्स, मोटी पाठ्यपुस्तकों और अंतहीन परीक्षण श्रृंखला पर बहुत अधिक निर्भर रहते हैं। यद्यपि ये महत्वपूर्ण हैं, लेकिन एक शक्तिशाली और अक्सर कम आंका जाने वाला संसाधन पत्रिकाएं हैं। जब बुद्धिमानी से उपयोग किया जाता है, तो पत्रिकाएं अवधारणाओं को स्पष्ट कर सकती हैं, वैज्ञानिक सोच का निर्माण कर सकती हैं तथा तैयारी को प्रार्थनिक और आकर्षक बना सकती हैं।

पाठ्यपुस्तकों से परे वैचारिक स्पष्टता का निर्माण

नीट और जेईई अब रटने की परीक्षा नहीं हैं, वे वैचारिक समझ और अनुप्रयोग का परीक्षण करते हैं। विज्ञान पत्रिकाएं जटिल विषयों जैसे आनुवंशिकी, विद्युत चुम्बकत्व, ऊष्मागतिकी या कार्बनिक आधारित और वास्तविक जीवन के संदर्भ में समझाती हैं। इससे छात्रों को यह समझने में मदद मिलती है कि कोई अवधारणा क्यों काम करती है, न कि केवल प्रश्न का समाधान कैसे किया जाए।

सिद्धांत को वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों से जोड़ना

पत्रिकाएं अक्सर पाठ्यक्रम के विषयों को वर्तमान अनुसंधान, चिकित्सा प्रगति, अंतरिक्ष मिशन और तकनीकी नवाचारों से जोड़ती हैं। उदाहरण के लिए:

टीकों पर लेख NEET के लिए जीव विज्ञान की अवधारणाओं को मजबूत करते हैं।

अर्धमालक या नवीकरणीय ऊर्जा पर कहानियां जेईई के लिए भौतिकी की अवधारणाओं को सुदृढ़ करती हैं। यह संबंधित प्रणालिक सोच में सुधार करता है, जो कि कठिन MCQs के लिए महत्वपूर्ण है।



पढ़ने और व्याख्या कौशल को मजबूत करना

कई छात्र अंक इसलिए नहीं खोते क्योंकि उन्हें उतर नहीं पता होता, बल्कि इसलिए कि वे प्रश्न को गलत तरीके से पढ़ लेते हैं। पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ने से सुधार होता है:

ध्यान और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

हो सकती है। शैक्षिक पत्रिकाओं में शामिल हैं:

सफलता की कहानियाँ

वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के साक्षात्कार

परीक्षा रणनीति और मानसिक स्वास्थ्य पर लेख

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

प्रश्नों को समझने में गति और सटीकता

योजना और एकाग्रता

वैज्ञानिक शब्दावली

छात्रों को ऐसी पत्रिकाएं पसंद करने चाहिए जो निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करें

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

स्पष्ट स्पष्टीकरण, सनसनीखेज विषय-वस्तु नहीं

आयु-उपयुक्त और परीक्षा-प्रार्थनिक सामग्री मात्रा से अधिक गुणवत्ता

मायने रखती है।

निष्कर्ष

पत्रिकाएं नीट या जेईई की सफलता के लिए शॉर्टकट नहीं हैं, लेकिन वे शक्तिशाली साथी हैं। वे सीखने को आनंददायक बनाते हैं, समझ को गहरा करते हैं, तथा प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफल होने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक मानसिकता विकसित करते हैं। दबाव और याददाश्त से प्रेरित तैयारी की यात्रा में, पत्रिकाएं स्पष्टता, जिज्ञासा और आत्मविश्वास लाती हैं - ये तीन तत्व हैं जिनकी प्रत्येक भावी डॉक्टर और इंजीनियर को आवश्यकता होती है।

सैवानिचुत प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कोर चंद एमएचआर मलोट पंजाब



सीमित संसार से असीमित कल्पना तक: बाल-पठन संस्कृति का संकट

-डॉ. सत्यवान सौरभ

एक समय ऐसा भी था, जब मुझे बाल-पत्रिकाओं के अस्तित्व की कोई जानकारी नहीं थी।

यह जानना तो दूर, मुझे इस बात का आभास तक नहीं था कि विद्यालयी पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अतिरिक्त भी बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ लिखा-पढ़ा जाता है। हमारे लिए पढ़ना केवल स्कूल से जुड़ी एक बाध्यता थी—

होमवर्क, परीक्षा और अंकों तक सीमित। इसका एक बड़ा कारण यह भी था कि हमारे घर में तो नियमित रूप से समाचार-पत्र आता था और न ही कोई पत्रिका।

पढ़ना हमारे जीवन की संस्कृति नहीं, बल्कि मजबूरी थी। फिर भी, यदि भीतर कहीं पढ़ने की रुचि ने जन्म लिया, तो उसका श्रेय पाठ्यपुस्तकों को नहीं, बल्कि कॉमिक्स को जाता है। बचपन में मैंने कॉमिक्स भी भूखर पढ़ीं। वे रंग-बिरंगे चित्र, छोटे-छोटे संवाद और घटनाओं की तेज गति मुझे एक ऐसी दुनिया में ले जाती थी, जहाँ कल्पना पर कोई रोक नहीं थी। पाठ्यक्रम की कहानियाँ और उपदेशों में उलझी रहती थीं, वहीं कॉमिक्स सहजता से आनंद देती थीं। वे मुझे यह सिखाती थीं कि पढ़ना बोर नहीं, उत्सव भी हो सकता है।

कॉमिक्स ने मेरे भीतर पाठक का पहला बीज बोया। उस समय यह समझ नहीं थी कि यह कोई साहित्यिक यात्रा है, लेकिन आज पीछे मुड़कर देखने पर स्पष्ट होता है कि पढ़ने की आदत का पहला द्वार वहीं से खुला। यह अनुभव अकेला नहीं है। असंख्य बच्चों के लिए कॉमिक्स, पहलियाँ और चित्र-कथाएँ ही पढ़ने की दुनिया में प्रवेश का पहला माध्यम रही हैं।

मुझे आज भी हिसार रेलवे स्टेशन की वह घटना स्पष्ट रूप से याद है। प्लेटफॉर्म पर स्थित एक बड़े पुस्तक-स्टॉल पर मेरी नज़र ठहर गई थी। वहाँ सजी हुई सुंदर, चमकदार और आकर्षक किताबें—विशेषकर बच्चों के लिए—मेरे लिए किसी अजाने संसार का द्वार थीं। यह पहली बार था, जब मन में एक सवाल जन्म ले चुका था—क्या किताबें केवल स्कूल तक ही सीमित हैं? क्या पढ़ने की दुनिया इससे कहीं बड़ी नहीं हो सकती? ऐसा उसी दिन मेरे भीतर एक ऐसा पाठक जन्म ले



चुका था, जिसे अभी अपनी भाषा, अपनी दिशा और अपना मंच मिला न बाकी था। यहीं से "सीमित संसार से असीमित कल्पना" की यात्रा शुरू होती है। बचपन में हमारी दुनिया अक्सर उन्हीं कहानियों और कविताओं तक सीमित रहती है, जो पाठ्यपुस्तकों में दी जाती हैं। ये पाठ आवश्यक हैं, पर पर्याप्त नहीं। वे ज्ञान तो देते हैं, पर कल्पना को पंख कम देते हैं। बाल-पत्रिकाएँ, बाल-साहित्य और रचनात्मक पठन इसी कमी को पूरा करते हैं। वे बच्चों को केवल अच्छा विद्यार्थी नहीं, संवेदनशील मनुष्य बनने की दिशा में ले जाते हैं।

दुर्भाग्य यह है कि आज बाल-पठन संस्कृति निरंतर हाशिये पर जा रही है। जिन बाल-पत्रिकाओं ने कभी पीढ़ियों को भाषा, संवेदना और सामाजिक चेतना दी, वे या तो बंद हो चुकी हैं या सीमित दायरे में सिमट गई हैं। इसका एक बड़ा कारण बदलती जीवन-शैली और डिजिटल माध्यमों का बढ़ता प्रभुत्व है। मोबाइल, टैबलेट और सोशल मीडिया ने बच्चों के हाथों से किताबें छीन ली हैं।

यह कहना आसान है कि तकनीक ने पढ़ने की आदत खत्म कर दी, लेकिन सच यह है कि हमने स्वयं किताबों को बच्चों के जीवन से धीरे-धीरे बाहर कर दिया है। अभिभावक आज बच्चों को मोबाइल देना आसान समझते हैं, लेकिन किताबें दिलाया अतिरिक्त मेहनत। स्कूल पाठ्यक्रम पूरा करने की जल्दी में रचनात्मक पठन को गैर-जरूरी मान लिया गया है। परिणामस्वरूप, बच्चों की कल्पना या तो पाठ्यक्रम की सीमाओं में कैद है या फिर डिजिटल शोर में खो चुकी है।

बाल-पठन संस्कृति किसी भी समाज की बौद्धिक और नैतिक नींव होती है। बाल-पत्रिकाएँ केवल मनोरंजन नहीं करतीं, वे भाषा गढ़ती हैं, प्रश्न पूछने की आदत डालती हैं और सामाजिक

यथार्थ से परिचित कराती हैं। एक अच्छी बाल-कहानी बच्चे को यह सिखा सकती है कि वह दुनिया को कैसे देखे, दूसरों के दुःख को कैसे समझे और अपने विचार कैसे व्यक्त करे।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बाल-साहित्य को फिर से गंभीरता से लें। इसे केवल "बच्चों की चीज" कहकर हल्के में न लें। बाल-पत्रिकाओं और बाल-पुस्तकों को स्कूलों, पुस्तकालयों और घरों में पुनः स्थान देना होगा। शिक्षक, अभिभावक और नीति-निर्माता—सभी को यह समझना होगा कि पढ़ने की आदत बचपन में ही विकसित होती है।

सरकारी और निजी स्तर पर ऐसे प्रयास होने चाहिए, जिनसे बाल-पत्रिकाएँ सुलभ हों। रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों और सार्वजनिक स्थानों पर पुस्तक-स्टॉल केवल सजावट न बनें, बल्कि बच्चों के लिए पहुँच योग्य बनें। हर बच्चा उस स्टॉल पर खड़ा होकर केवल देखने तक सीमित न रह जाए—यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—

आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

जिसे बच्चा खंड नहीं पाता—आज जब नई शिक्षा नीति रचनात्मकता और समग्र विकास की बात करती है, तब बाल-पठन संस्कृति को उसके केंद्र में रखना अनिवार्य है। पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ बाल-साहित्य को भी शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा। क्योंकि पढ़ना केवल जानकारी अर्जित करना नहीं, बल्कि सोचने की कला सीखना है। अंततः, यह स्वीकार करना होगा कि कभी-कभी एक किताब—

व्हाट्सएप निमंत्रण : सुविधा के साथ संवेदना भी जरूरी

बाबूलाल नागा

समय के साथ समाज बदला है और उसके साथ बदल गया है हमारे आपसी संबंध का तरीका भी। एक दौर था जब शादी-ब्याह, गृहप्रवेश या किसी अन्य पारिवारिक कार्यक्रम का निमंत्रण स्वयं घर आकर दिया जाता था। वह कार्ड केवल सूचना नहीं होता था बल्कि रिश्तों की औपचारिक अभिव्यक्ति होता था। दो शब्दों का आग्रह—“जरूर आना”—सामने वाले को यह एहसास दिलाने के लिए काफी होता था कि उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण है। आज वही निमंत्रण व्हाट्सएप के माध्यम से भेजा जा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह तरीका इसी संकल्प है, समय और संसाधनों की बचत करता है। बदलते दौर में तकनीक को नकारा नहीं जा सकता लेकिन प्रश्न यह है कि क्या सुविधा के साथ वह संवेदना भी बनी रह पा रही है जो रिश्तों की आत्मा होती है?

अक्सर देखा जाता है कि व्हाट्सएप पर कार्ड भेजने के बाद कोई फोन या व्यक्तिगत संवाद नहीं होता। ऐसे में आम व्यक्ति के मन में असमंजस पैदा होता है—क्या वह वास्तविक निमंत्रण है या केवल औपचारिक सूचना? क्या हमारी उपस्थिति वास्तव में अपेक्षित है या नहीं?

यह स्थिति किसी को असहज कर देती है। पहले मेहमानों से संपर्क कर यह पूछा जाता था कि वे कब और कैसे पहुंचेंगे। आज कई बार केवल यह देखा जाता है कि संदेश 'देखा गया' या नहीं। संवाद की यह कमी रिश्तों में एक अनकहा फासला पैदा कर रही है।

व्हाट्सएप निमंत्रण कई बार ब्रॉडकास्ट सूची में भेजे जाते हैं। एक ही संदेश अनेक लोगों तक पहुंच जाता है लेकिन व्यक्तिगत आग्रह का भाव कहीं खो जाता है। जब ऐसे निमंत्रण पर कोई व्यक्ति कार्यक्रम में नहीं पहुंच पाता तो बाद में यह कह दिया जाता है—“कार्ड तो भेजा था।” यह वाक्य सुनने में सामान्य लगता है लेकिन यही संवाद की कमी उजागर हो जाती है।

सच यह है कि कार्ड भेजना और

दिल से बुलाना—दोनों अलग बातें हैं। कार्ड सूचना देता है जबकि आग्रह अपनापन जताता है। तकनीक सूचना दे सकती है लेकिन अपनापन अब भी ईंसानी आवाज में ही झलकता है। यह कहना भी उचित नहीं होगा कि हर व्हाट्सएप निमंत्रण औपचारिक ही होता है। कई लोग पूरी संवेदनशीलता के साथ फोन भी करते हैं, हालचाल भी पूछते हैं और डिजिटल माध्यम को



केवल एक सहायक साधन की तरह उपयोग करते हैं। दरअसल, आवश्यकता इस संतुलन की है। आज जब जीवन की गति तेज है तो यह स्वाभाविक है कि सभी के पास समय की कमी हो। लेकिन रिश्तों में समय देना ही अगर सामान्य व्यवहार बन जाए तो यह चिंता का विषय है। एक छोटा-सा फोन कॉल, दो मिनट की बातचीत, सामने वाले को यह विश्वास

दिला सकती है कि उसकी मौजूदगी मायने रखती है। यह लेख किसी व्यवस्था या तकनीक के विरोध में नहीं है। यह केवल यह स्मरण कराने का प्रयास है

डिजिटल युग में परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2026 के ऐतिहासिक नियम परिवर्तन-एक समग्र विश्लेषण

भारत की प्रशासनिक भर्ती प्रणाली में एक ऐतिहासिक संरचनात्मक सुधार-यूपीएससी ने आईएएस-आईपीएस के लिए बदले नियम, अब बार-बार नहीं दे पाएंगे परीक्षा

आईएएस और आईएफएस को स्टेपिंग स्टोन की तरह प्रयोग करने व अपग्रेड सिंड्रोम प्रवृत्ति पर सीधा प्रहार - सीरियल अटैम्प्ट संस्कृति पर निर्णायक प्रहार सराहनीय कदम - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तर पर वर्तमान डिजिटल युग में जहां एक ओर तकनीक ने ज्ञान, सूचना और अवसरों को वैश्विक स्तर पर लोकतांत्रिक बनाया है, वहीं दूसरी ओर इसी तकनीक के दुरुपयोग ने परीक्षा प्रणालियों की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिह्न भी खड़े कर दिए हैं। बीते कुछ वर्षों में भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में उच्च स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक, डिजिटल हैकिंग, प्रॉक्सि कैडिडेट्स कोचिंग-माफिया गठजोड़ और मॉरिट के क्षरण जैसी घटनाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। भारत में नीट, रेलवे, राज्य लोक सेवा आयोगों और विभिन्न भर्ती बोर्डों की परीक्षाओं में सामने आए हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि घोटालों ने यह स्पष्ट कर दिया कि पारंपरिक नियमों और ढांचागत कमजोरियों के साथ आधुनिक डिजिटल चुनौतियों का सामना करना अब संभव नहीं रह गया है। इसी पृष्ठभूमि में संघ लोक सेवा आयोग ने सिविल सेवा परीक्षा 2026 के लिए जो नोटिफिकेशन 4 फरवरी 2026 को जारी किया है, वह केवल एक

सामान्य भर्ती विज्ञापन नहीं, बल्कि भारत की प्रशासनिक भर्ती प्रणाली में एक ऐतिहासिक संरचनात्मक सुधार के रूप में देखा जा रहा है। यह नोटिफिकेशन न केवल उम्मीदवारों के लिए नियमों में भारी परिवर्तन करता है, बल्कि यह स्पष्ट संकेत भी देता है कि आयोग अब मॉरिट, अवसरों की समानता, नैतिकता और सेवा-प्रतिबद्धता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के लिए कठोर निर्णय लेने से पीछे नहीं हटेगा। यूपीएससी सीएसई - 2026 के माध्यम से कुल 933 पदों पर भर्ती की जानी है, जिनमें से 33 पद बेंचमार्क दिव्यांग श्रेणी के लिए आरक्षित हैं। ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया 4 फरवरी 2026 से प्रारंभ हो चुकी है और आवेदन की अंतिम तिथि 24 फरवरी 2026 निर्धारित की गई है। इच्छुक और पात्र उम्मीदवार आयोग की आधिकारिक वेबसाइट upsconline.nic.in के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। हालांकि, इस बार आवेदन भरना मात्र औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि नए नियमों की जटिलता और दीर्घकालिक प्रभाव को समझें बिना किया गया कोई भी निर्णय उम्मीदवार के पूरे करियर को प्रभावित कर सकता है।

साथियों बात अगर हम केवल एक अतिरिक्त मौका: सीरियल अटैम्प्ट संस्कृति पर निर्णायक प्रहार इस बदले हुए नियम को समझने की करें तो, नोटिफिकेशन का सबसे महत्वपूर्ण और विवादास्पद प्रावधान यह है कि जो आईएएस आईएफएस उम्मीदवार सीएसई -2025 या उससे पहले की परीक्षा के आधार पर किसी भी सिविल सेवा में चयनित या नियुक्त हो चुके हैं, उन्हें सीएसई-2026 या सीएसई-2027 में केवल एक बार और परीक्षा देने का अवसर दिया जाएगा। यह

अवसर भी केवल उनके बचे हुए अटैम्प्ट्स के उपयोग तक सीमित रहेगा और इसके लिए उन्हें तत्काल सेवा से इस्तीफा देने की आवश्यकता नहीं होगी। यह नियम उस प्रवृत्ति पर सीधा प्रहार है जिसमें उम्मीदवार एक सेवा प्राप्त करने के बाद भी बार-बार परीक्षा देकर "अप्रोड सिंड्रोम" का शिकार बने रहते थे। इससे न केवल नए और पहली बार प्रयास करने वाले अभ्यर्थियों के अवसर सीमित होते थे, बल्कि प्रशासनिक ढांचे में भी अस्थिरता उत्पन्न होती थी। नए नियमों के अनुसार, जो उम्मीदवार पिछली परीक्षाओं के परिणामस्वरूप भारतीय प्रशासनिक सेवा या भारतीय विदेश सेवा में नियुक्त हो चुके हैं, वे सीएसई-2026 में शामिल होने के लिए पूर्णतः अयोग्य होंगे। यह निर्णय वैश्विक प्रशासनिक प्रणालियों के अनुरूप है, जहां शीर्ष सेवाओं को एक करियर-फाइनल डेरिनेशन माना जाता है, न कि अस्थायी पड़ाव। इस प्रावधान का उद्देश्य स्पष्ट है आईएएस और आईएफएस को एक बार प्राप्त करने के बाद उसे "स्टेपिंग स्टोन" की तरह प्रयोग करने की मानसिकता कोस्टीक रूप से समाप्त करना।

साथियों बात अगर हम प्रीलिम्स क्लियर करने के बाद भी मेन्स का अवसर नहीं: समय-आधारित निष्पक्षता इसको समझने की करें तो, यदि कोई उम्मीदवार सीएसई-2026 की प्रारंभिक परीक्षा पास कर लेता है, लेकिन उसके बाद उसे पिछली परीक्षा के आधार पर आईएएस या आईएफएस में नियुक्ति मिल जाती है और वह उस सेवा का सदस्य बना रहता है, तो वह सीएसई-2026 की मुख्य परीक्षा में शामिल होने का पात्र नहीं रहेगा। यह नियम परीक्षा प्रक्रिया में टाइम-लाइन आधारित निष्पक्षता को



सुनिश्चित करता है और "दो नावों में पैर रखने" की प्रवृत्ति को रोकता है। यदि कोई उम्मीदवार मुख्य परीक्षा शुरू होने के बाद लेकिन परिणाम घोषित होने से पहले आईएएस या आईएफएस में नियुक्त हो जाता है और सेवा में बना रहता है, तो उसे सीएसई-2026 के परिणाम के आधार पर भारतीय पुलिस सेवा में चयनित या नियुक्त हो चुके हैं, वे सीएसई-2026 के परिणाम के आधार पर चुने नहीं जाएंगे। यह नियम यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी उम्मीदवार एक ही समय में दो अलग-अलग चयन प्रक्रियाओं का लाभ न

उठा सके।

साथियों बात अगर हम आईपीएस के लिए 'नो रि-एंट्री' नीति को समझने की करें तो नोटिफिकेशन में स्पष्ट किया गया है कि जो उम्मीदवार पिछली परीक्षा के आधार पर भारतीय पुलिस सेवा में चयनित या नियुक्त हो चुके हैं, वे सीएसई-2026 के परिणाम के आधार पर चुने नहीं जाएंगे। यह नियम पुलिस नेतृत्व में निरंतरता, प्रशिक्षण निवेश की सुरक्षा और प्रशासनिक स्थिरता

के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ट्रेनिंग से केवल एक बार छूट: सेवा-प्रतिबद्धता का नया मानक-आईएएस, आईपीएस या किसी अन्य ग्रुप-A सेवा में चयनित उम्मीदवार सीएसई-2027 में तभी शामिल हो सकते हैं जब उन्हें सीएसई-2026 के आधार पर अलॉट की गई सेवा की ट्रेनिंग से केवल एक बार छूट दी गई हो। यह प्रावधान यह स्पष्ट करता है कि प्रशिक्षण अब औपचारिकता नहीं, बल्कि सेवा का अनिवार्य और सम्मानजनक हिस्सा है।

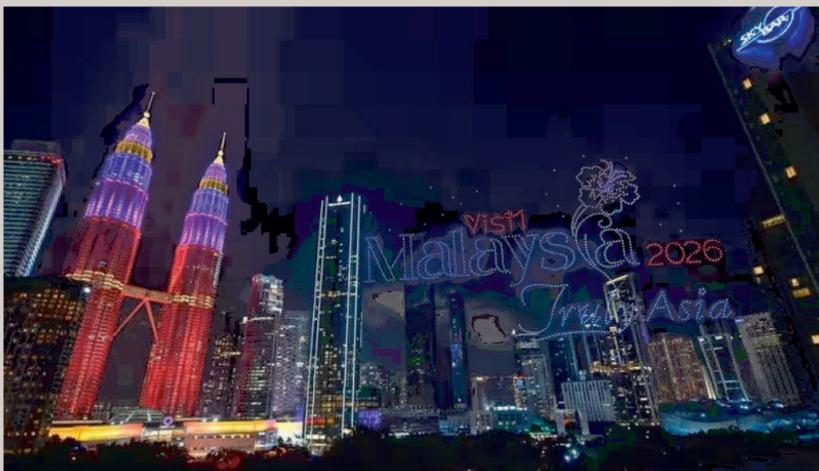
साथियों बात अगर हम 'नो स्टेप-नो सर्विस': फाउंडेशन कोर्स की अनिवार्यता को समझने की करें तो, नए नियमों के अनुसार, चयनित उम्मीदवार को फाउंडेशन कोर्स में शामिल होना अनिवार्य है। यदि कोई उम्मीदवार न तो ट्रेनिंग में शामिल होता है और न ही विधिवत छूट प्राप्त करता है, तो उसकी सेवा आवंटन स्वतः रद्द कर दी जाएगी। यह प्रावधान प्रशासनिक अनुशासन और अंतर्निहित संस्कृति को मजबूत करता है। यदि कोई उम्मीदवार सीएसई-2027 में चयनित होता है, तो वह या तो सीएसई-2026 या सीएसई-2027 में अलॉट की गई सेवा में से एक का ही चयन कर सकता है। चयनित सेवा के अतिरिक्त अन्य सभी सेवा आवंटन स्वतः रद्द कर दिए जाएंगे। यह नियम उम्मीदवारों को स्पष्ट और जिम्मेदार निर्णय लेने के लिए बाध्य करता है। दोनों चयन रद्द होने की स्थिति: अंतिम चेतावनी-यदि उम्मीदवार न तो सीएसई-2026 और न ही सीएसई-2027 में अलॉट की गई सेवा में से एक का ही चयन में शामिल होता है, तो दोनों सेवाओं का आवंटन रद्द कर दिया जाएगा। यह प्रावधान यह दर्शाता है कि यूपीएससी अब अनिश्चितता और अनिर्णय को सहन करने

के मूड में नहीं है। तीसरे प्रयास से पहले इस्तीफा अनिवार्य: करियर-फाइनलिटी की अवधारणा-नोटिफिकेशन का सबसे निर्णायक नियम यह है कि जो उम्मीदवार पहले दो प्रयासों में चयनित हो चुके हैं, वे तीसरी बार परीक्षा नहीं दे सकते। यदि वे सीएसई-2028 या उसके बाद किसी परीक्षा में शामिल होना चाहते हैं, तो उन्हें वर्तमान सेवा से इस्तीफा देना होगा। यह नियम सिविल सेवा को एक पूर्णकालिक प्रतिबद्ध करियर के रूप में स्थापित करता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारतीय प्रशासनिक प्रणाली का नया युग यूपीएससी सीएसई-2026 का यह नोटिफिकेशन केवल नियमों का संग्रह नहीं, बल्कि भारतीय प्रशासनिक भर्ती प्रणाली के नैतिक पुनर्गठन का दस्तावेज है। यह डिजिटल युग की चुनौतियों, अवसरों की समानता, प्रशिक्षण निवेश, सेवा-गरिमा और युवा प्रतिभाओं के लिए न्यायसंगत मंच सुनिश्चित करने की दिशा में एक साहसिक कदम है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें तो यह सुधार भारत को उन देशों की श्रेणी में खड़ा करता है जहां सिविल सेवा को केवल नौकरी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्तरदायित्व माना जाता है। जो उम्मीदवार 24 फरवरी 2026 तक आवेदन करने जा रहे हैं, उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे इस नोटिफिकेशन को केवल पढ़ें नहीं, बल्कि समझें, विश्लेषण करें और दीर्घकालिक रणनीति के साथ निर्णय लें, क्योंकि अब यूपीएससी में सफलता केवल परीक्षा पास करने का नाम नहीं, बल्कि स्पष्ट दृष्टि, नैतिक प्रतिबद्धता और सेवा-समर्पण को परीक्षा भी बन चुकी है।

मलेशिया दौरा 2026: क्या बदलेगा एशिया का शक्ति-संतुलन?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"



की बढ़ती आवश्यकताओं को मजबूती देगे, जबकि भारतीय आईटी, फार्मा और स्टार्टअप सेक्टर मलेशियाई बाजार में नए अवसरों की खोज करेंगे। दोनों देश व्यापारिक बाधाओं को कम करने, लॉजिस्टिक्स व्यवस्था सुधारने और सप्लाई चेन को सशक्त बनाने पर ठोस सहमति बना सकते हैं। इंडो-पैसिफिक व्यापार गलियारों को गति देकर चीन पर निर्भरता घटाने का प्रयास भी इस एजेंडे का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा। मोदी का दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट है—व्यापार को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि रणनीतिक शक्ति के रूप में विकसित करना।

ऊर्जा क्षेत्र में यह दौरा भविष्य की हरित क्रांति की मजबूत आधारशिला रखने की पूरी क्षमता रखता है। रिन्यूएबल एनर्जी, ग्रीन हाइड्रोजन, क्वीन टेक्नोलॉजी और ऊर्जा संक्रमण पर सहयोग के नए द्वार खुलने की प्रबल संभावना है। मलेशिया के तेल और गैस संसाधन भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाएंगे, जबकि भारत की उन्नत सोलर और इलेक्ट्रॉनिक्स और तेल-गैस संसाधन भारत

के और अधिक निकट पहुंचाएंगी। ऊर्जा संक्रमण से जुड़े संभावित समझौते दोनों देशों को जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध एक साझा और प्रभावी मोर्चे पर खड़ा करेंगे। यह साझेदारी आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन का प्रेरणादायक उदाहरण बनेगी।

मैरिटाइम सिक्योरिटी इस यात्रा का सबसे संवेदनशील, रणनीतिक और महत्वपूर्ण पक्ष है। दक्षिण चीन सागर में बढ़ते तनाव के बीच भारत और मलेशिया का नौसैनिक सहयोग क्षेत्रीय स्थिरता के लिए अनिवार्य बन चुका है। संयुक्त सैन्य अभ्यास, इंटरलिंक रोयल्टी और मैरिटाइम डोमेन अवेयरनेस को मजबूत करना प्रमुख प्राथमिकता होगी। मलक्का जलडमरूमध्य की सुरक्षा वैश्विक व्यापार की जीवनरेखा है, जिसकी स्थिरता दोनों देशों के साझा हितों से जुड़ी है। यह सहयोग समुद्री सुरक्षा को नई दिशा देगा, जहां साझेदारी टकराव पर भारी पड़ेगी।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की नेतृत्व भूमिका इस दौर के माध्यम से और अधिक

सुदृढ़ तथा प्रभावशाली होगी। एक ईस्ट-सेंट्रल शक्ति व्यवस्था स्थापित होगी। मोदी का उद्देश्य पूरी तरह स्पष्ट है—इंडो-पैसिफिक को एक शांतिपूर्ण, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत अभियानों में सक्रिय विकास और सुरक्षा साथ-साथ आगे बढ़ें।

निवेश के क्षेत्र में यह यात्रा अवसरों के नए द्वार खोलने वाली सिद्ध होगी। मलेशियाई कंपनियों मेक इन इंडिया और इन्वैस्टमेंट प्रोमोशन बोर्डों में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से भारत की विकास यात्रा का हिस्सा बन सकती है। सीईओ फोरम में होने वाले समझौते रोजगार सृजन, नवाचार और तकनीकी हस्तांतरण को नई गति प्रदान करेंगे। भारतीय प्रवासी

समुदाय निवेशकों और सरकारों के बीच एक मजबूत सेतु की भूमिका निभाएगा। मोदी की उद्योगपतियों से मुलाकात एफडीआई को विशेष रूप से ग्रीन एनर्जी, सेमीकंडक्टर, मैनुफैक्चरिंग और डिजिटल टेक्नोलॉजी क्षेत्रों में प्रोत्साहित करेगी। यह निवेश साझेदारी आपसी विश्वास, स्थायित्व और दीर्घकालिक सहयोग का मजबूत आधार बनेगी।

सॉफ्ट पावर के क्षेत्र में भी यह दौरा गहरा और दूरगामी प्रभाव डालेगा। स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यटन, संस्कृति और हेल्थ टेक में बढ़ता सहयोग द्विपक्षीय संबंधों को मानवीय और संवेदनशील आधार प्रदान करेगा। महामारी के बाद हेल्थ टेक और वैक्सिन सहयोग की बढ़ती अहमियत इस साझेदारी को और सुदृढ़ बनाएगी। छात्र विनिमय कार्यक्रम और शोध साझेदारियां ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूती देगी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों और जन-संपर्क से दोनों समाजों के बीच भावनात्मक जुड़ाव गहरा होगा। यह यात्रा प्रमाणित करेगी कि कूटनीति केवल समझौतों तक सीमित नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने वाली निरंतर प्रक्रिया भी है।

प्रधानमंत्री मोदी की मलेशिया यात्रा एक ऐतिहासिक, निर्णायक और दूरदर्शी क्षण के रूप में दर्ज होगी। यह दौरा व्यापार, ऊर्जा, डिफेंस, सुरक्षा और निवेश के नए युग की मजबूत नींव रखेगा। मोदी और अनवर के बीच की सकारात्मक केमिस्ट्री इन समझौतों को व्यवहारिक और प्रभावी रूप देगी। यह केवल दो देशों की औपचारिक मुलाकात नहीं, बल्कि एशिया के भविष्य की दिशा तय करने वाला रणनीतिक प्रयास है। भारत-मलेशिया साझेदारी वैश्विक चुनौतियों के सामने एक सशक्त और अटूट दीवार बनकर उभरेगी। यह यात्रा उम्मीद, आत्मविश्वास और रणनीतिक दूरदृष्टि की प्रतीक बनकर इतिहास में स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज होगी।

आबकारी विभाग पर कठपुतली होने का आरोप, महूआ कारोबार में माफियागिरी का दावा

आरटीआई एक्टविस्ट डॉ. राजकुमार यादव का बयान

परिवहन विशेषज्ञ

राउरकेला: मीडिया और राजनीति से जुड़े आरटीआई एक्टविस्ट डॉ. राजकुमार यादव ने आबकारी विभाग और महूआ कारोबार से जुड़े कथित गठजोड़ को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने दावा किया कि आबकारी विभाग को सुनियोजित तरीके से "कठपुतली" बना दिया गया है और महूआ व्यापार से जुड़े कुछ प्रभावशाली तत्व पूरे तंत्र को प्रभावित कर रहे हैं।

डॉ. यादव ने अपने बयान में कहा कि जो लोग पहले कांटा (स्क्रेप) व्यवस्था में सक्रिय थे, वही अब महूआ कारोबार में प्रवेश कर चुके हैं और धीरे-धीरे इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ा लिया है। इससे उनका आर्थिक स्थिति लगातार कमजोर होती जा रही है। डॉ.

यादव का आरोप है कि महूआ कारोबार से जुड़े कुछ लोग माफियागिरी के तरीके से काम कर रहे हैं, जिससे पारदर्शिता और निष्पक्षता प्रभावित हो रही है।

आबकारी विभाग की भूमिका पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि विभाग स्वतंत्र रूप से काम करने के बजाय दबाव में निर्णय लेता हुआ दिखाई दे रहा है। विभागीय कर्मचारियों व अधिकारियों के सम्पर्क की निष्पक्ष जांच हो। उन्होंने मांग की कि पूरे मामले की निष्पक्ष और पारदर्शी जांच कराई जाए तथा यह स्पष्ट किया जाए कि विभागीय नीतियों किनके हित में बनाई गई हैं व



किनके हित में प्रयोग की जा रही है।

डॉ. यादव ने यह भी चेतावनी दी कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं की गई तो वे इस मामले को उचित व उच्चस्तरीय विभागीय कार्रवाई हेतु प्रयास करेंगे। उनका कहना है कि तथ्यों के सामने आने के बाद कई महत्वपूर्ण पहलू उजागर हो सकते हैं।

उन्होंने प्रशासन से महूआ कारोबार और आबकारी विभाग की भूमिका की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है जिससे कथित माफियागिरी पर रोक लगाई जा सके। डॉ. यादव ने कहा कि पारदर्शी व्यवस्था और निष्पक्ष कार्रवाई ही इस पूरे विवाद का स्थायी समाधान हो सकती है। वहीं बार लाइसेंस धारकों के साथ भी भेदभाव हो रहा है जहां पूंजीपतियों और मध्यम वार मालिकों के लाइसेंस व उनके मानदण्डों पर भी निष्पक्ष और पारदर्शी जांच कराई जाए तब तक पारदर्शिता पूर्ण पद्धति से न्यायसंगत तरीके से चल सके।

डिजिटल दुनिया का अंधेरा पहलू: गाजियाबाद में ऑनलाइन गेमिंग तीन मासूम ज़िंदगियाँ छीनीं।

-सुनील कुमार महला

हाल ही में उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में नाबालिग किशोरियों कोरियन गेम की लत का शिकार हो गई, यह बहुत ही दुखद घटना है। खेल के साथ ज़िंदगियाँ भी खत्म हो गईं। दरअसल, ऑनलाइन गेम का टास्क पूरा करने के लिए तीन बहनों ने नौवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली, यह वास्तव में दिल दहलाने वाली घटना है। पाठकों को बताता चलूँ गाजियाबाद में टीला मोड़ थाना इलाके में 3 फरवरी 2026 मंगलवार को ऑनलाइन कोरियन गेम 'लव गेम' रात का टास्क पूरा करने के लिए भारत सिटी सोसायटी की नौवीं मंजिल से तीन बहनों ने एक साथ छलांग लगाकर खुदकुशी कर ली। इस संबंध में पुलिस को किशोरियों के कमरे से आठ पंज का सुसाइड नोट और एक डायरी मिली है। पुलिस ने दोनों को कब्जे में लिया है। तीनों के कमरे की दीवार पर 'मेक मी ए हार्ट ऑफ ब्रोकन' लिखा हुआ मिला है। पुलिस ने बताया है कि फ्लैट की बालकनी से

रात 2.15 बजे तीन बहनों ने छलांग लगाने की सूचना मिली थी। वास्तव में यह घटना एक ऑनलाइन गेम की लत और उस पर अत्यधिक निर्भरता से जुड़ी है। पुलिस ने यह पाया कि बच्चों को गेम खेलने से रोकने पर वे भावनात्मक रूप से टूट गए थे। बहरहाल, यह पहली बार नहीं है जब ऐसी घटना घटित हुई है। पहले ही ऑनलाइन गेम्स के कारण बच्चों/लोगों की जाने जा चुकी है। दूसरे शब्दों में कहें तो भारत में ऑनलाइन गेमिंग (ऑनलाइन वीडियो गेम्स और मोबाइल गेम्स) से जुड़ी लत, तनाव और 6 वित्तीय/मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण कई घटिया घटना सामने आए हैं, जिनमें कुछ मौतें, आत्महत्याएँ और जानलेवा घटनाएँ शामिल हैं। यहां पाठकों को बताता चलूँ कि वर्ष 2016-17 में ऑनलाइन गेम बूटल के कारण लोगों की जान चली गई थी। यह भी एक ऑनलाइन चैलेंज था और इसमें भी टास्क पूरे करने होते थे। वास्तव में कुछ टास्क खतरनाक होते थे, जिसमें लोगों की जान

चली जाती थी। इसी प्रकार से साल 2018 में किकी चैलेंज बच्चों की बीच लोकप्रिय हुआ। इस टास्क में लोग कार को धीरे-धीरे चलते हुए उससे बाहर आते थे और डांस करते थे। इस टास्क में कई लोग घायल हुए। इतना ही नहीं, मोमो चैलेंज भी 2018 में ही वायरल हुआ था। इसमें एक यूजर मोमो बच्चों को परेशान करता है। इसमें भी टास्क पूरा करने के लिए कहा जाता है, जिसमें खुद को नुकसान पहुंचाना भी शामिल था। इसी प्रकार से साल 2019 में मध्य प्रदेश के नीचम में 16 वर्षीय लड़के ने खबरों के अनुसार लगभग 6 घंटे लगातार पब-जी गेम खेलते रहने के बाद कार्डियक अरेस्ट (हार्ट अटैक) से मीत हो गई थी। परिवार के अनुसार वह गेम में इतनी लीन हो गया था कि अचानक स्वास्थ्य बिगड़ खेतों में समय अचानक गिर पड़ा और हृदयाघात/स्ट्रोक से उसकी मौत हुई। डॉक्टरों ने गेम की लत और मानसिक तनाव को एक कारण माना। मोबाइल गेम 'फ्री-फायर' की

लत के कारण (मध्य प्रदेश) में एक किशोर ने फांसी लगाकर अपनी जान ले ली। इसी प्रकार से इंदौर में एक 13 वर्षीय बच्चे ने ऑनलाइन गेम में हार और पैसे कटने के डर से आत्महत्या की, क्योंकि उसे यह डर था कि माता-पिता इसके लिए उसे डांटेंगे। राजस्थान के श्रीगंगानगर में भी एक युवक ने लुडो/ऑनलाइन गेमिंग में हानि के बाद कर्ज और तनाव के कारण आत्महत्या कर ली। यही नतीजा है जो भोपाल में एक चौदह वर्षीय छात्र ने भी मोबाइल गेमिंग की लत के चलते फांसी लगा ली थी। बहरहाल, यदि हम यहां पर सरल शब्दों में बात करें तो हाल की घटनाएँ यह दिखाती हैं कि आज के बच्चे और युवा डिजिटल दुनिया में कितनी गहराई तक फंसे जा रहे हैं। वे एक साथ दो दुनिया में जी रहे हैं—एक अस्लीन (वास्तविक) और दूसरी मोबाइल-अस्लीन वाली आभासी दुनिया या यूँ कहें कि वर्चुअल दुनिया। गेम और सोशल मीडिया बुरे नहीं हैं, लेकिन जब यही किसी की पहचान, खुशी और सहारे का एकमात्र

जरिया बन जाएं, तो समस्या खड़ी हो जाती है। बहरहाल, मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार तीनों किशोरियाँ मोबाइल गेम की लत में थीं। पिता के रोकने पर उन्होंने यह कदम उठाया। हाल फिलहाल मामले की गहन जांच जारी है, लेकिन यह साफ है कि परिवार और बच्चों के बीच संवाद की कमी इस तरह की घटनाओं को जन्म देती है। आज कई परिवार या तो बच्चों की डिजिटल आदतों पर ध्यान नहीं देते, या फिर अचानक सखी दिखाते लगते हैं—लेकिन दोनों ही तरीके नुकसानदेह हैं। वास्तव में, यह समस्या सिर्फ एक परिवार या एक शहर तक सीमित नहीं है। झारखंड और भोपाल की घटनाएँ भी बताती हैं कि सोशल मीडिया और रील्स की लत रित्तों और संवेदनाओं पर भारी पड़ रही है। जब रोक-टोक होती है, तो टकराव पैदा होता है, और वही टकराव कभी आत्महत्या तो कभी हिंसा का रूप ले लेता है। असल सवाल यही है कि क्या हम ऐसा समाज बना रहे हैं, जहां मोबाइल की दुनिया इंसानी रित्तों से ज्यादा

ताकतवर हो गई है। इस संकट से बचने का रास्ता सख्ती नहीं, बल्कि समझ, संवाद और संतुलन है—ताकि बच्चे स्क्रीन के नहीं, जीवन के साथ जुड़े रहें। दूसरे शब्दों में कहें तो ऑनलाइन गेमिंग की बढ़ती लत पर नियंत्रण के लिए माता-पिता और सरकार दोनों की सहमति चाहिए। माता-पिता को यह चाहिए कि वे अपने बच्चों के स्क्रीन टाइम की स्पष्ट सीमा तय करें और मोबाइल-इंटरेट के उपयोग पर निगरानी रखें। पब-जी गेम, लुडो, पहाड़ और रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दें। किशोरों को यह समझाना चाहिए कि मोबाइल गेमिंग का उपयोग एक शक्ति है, लेकिन यह भी हो सकता है कि यह हमारे जीवन को खराब करे। इसलिए इस ट्रेंड को सख्त कानून से मनचाहा आकार दिया जा सकता है। माता-पिता और शिक्षक उस कुम्हार की भूमिका निभाते हैं, जिनका स्पष्ट बच्चों का भविष्य गढ़ता है। वास्तव में सच तो यह है कि जैसी हिंसा का रूप ले लेता है। असल सवाल यही है कि क्या हम ऐसा समाज बना रहे हैं, जहां मोबाइल की दुनिया इंसानी रित्तों से ज्यादा

है। डॉ. फटकार की जगह समझ और संवाद उन्हे बेहतर इंसान बनाते हैं। अच्छे मूल्य बच्चों में आत्मविश्वास की नींव रखते हैं। गलत संगति या उपेक्षा उस कभी मिट्टी को बिगाड़ सकती है। इसलिए बचपन में दिया गया संस्कार जीवन भर साथ निभाता है। हर बच्चा अनोखा घड़ा है, जिसे अलग समझ की जरूरत होती है। समझदारी भरे हाथों में ही सुंदर और ट्रिकाऊ व्यक्तिव आकार लेता है। इसलिए इस ट्रेंड को सख्त कानून/सतत संवाद बनाए रखना और उन्हे ऑनलाइन खतरों के प्रति जागरूक करना भी जरूरी है। स्वरकार को भी यह चाहिए कि सरकार उम्मीदवारित नियमों के साथ सख्त कानून बनाए। होना तो यह चाहिए कि ऑनलाइन गेम्स में समय और खर्च की सीमा तय गढ़ना है, जिनका स्पष्ट बच्चों का भविष्य गढ़ता है। वास्तव में सच तो यह है कि जैसी सोच, संस्कार और व्यवहार बच्चों को मिलते हैं, वे वैसे ही चलते चलते जाते हैं। प्रेम और धैर्य से दिया गया मार्गदर्शन उन्हे मजबूत बनाता

टेंडर फिक्सिंग का रास्ता खुला, नवीन पटनायक ने बंद किया, मोहन माझी ने खोला

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर : वक्स डिपार्टमेंट ने राज्य में कंस्ट्रक्शन के काम के टेंडर प्रोसेस से मैक्सिमम -14.99% बिडिंग का नियम हटा दिया है। यानी, जो भी इंजीनियर्स द्वारा तय कीमत से कम कीमत पर प्रोजेक्ट के लिए बिड मंगाएगा, वही काम ले सकता है। जब से वक्स डिपार्टमेंट ने यह नियम (3 जनवरी, 2026 से) लागू किया है, तब से राज्य भर के कॉन्ट्रैक्टरों और इंजीनियर्स में नाराजगी बढ़ रही है। इतना ही नहीं, पावर कॉरिडोर में चर्चा है कि इस नियम ने एक बार फिर राज्य में टेंडर फिक्सिंग का रास्ता खोल दिया है।

वक्स डिपार्टमेंट ने 3 जनवरी को OPWD कोड में बदलाव करते हुए -14.99% बिडिंग सिस्टम को हटा दिया और यह नियम बनाया कि अगर कोई बिड डिपार्टमेंट के अंदाजित कीमत से कम आती है, तो डिपार्टमेंट के

इंजीनियर्स की एक टेक्निकल कमेटी इस पर विचार करेगी कि यह बहुत कम बिड है या नहीं और एक्शन लेगी। कमेटी जिसे भी काबिल समझेगी, उसे वर्क ऑर्डर देगी। यानी, इंजीनियर तय करेगी कि किस कॉन्ट्रैक्टर/फर्म को काम दिया जाएगा। यह टेंडर राज्य में 2013 तक चलता रहा। जिसकी वजह से ओडिशा टेंडर फिक्सिंग का हॉट स्पॉट बन गया और उसी समय राज्य में गैंगवार भी चल रहा था। अलग-अलग जगहों पर गैंगस्टर तय कर रहे थे कि कौन सी फर्म कहां काम करेगी। असल में, अक्सर शिकायतें मिल रही थीं कि राज्य भर में कई छोटे-बड़े गैंग अलग-अलग इंजीनियरिंग ऑफिस में घुसकर इंजीनियरों को पीट रहे थे और बंदूक की नोक पर काम छीन रहे थे। वे कॉन्ट्रैक्टर का काम भी हासिल करने की कोशिश कर रहे थे।

यह देखते हुए कि राज्य सरकार के

अलग-अलग प्रोजेक्ट्स की किस्मत का फैसला क्रिमिनल्स कर रहे थे, राज्य सरकार ने 8 नवंबर, 2013 को OPWD कोड में बदलाव किया और मनमानी काम बोली और टेंडर फिक्सिंग के खतरे से बचने के लिए -14.99% की मैक्सिमम बिडिंग सीलिंग लागू की। यह भी नियम बनाया कि अगर एक से ज्यादा बिडर L-1 बनते हैं, तो वर्क ऑर्डर लॉटरी से तय किया जाएगा। कोई भी इंजीनियर यह तय नहीं कर सकता कि टेंडर का काम किसे दिया जाएगा। इसके बाद टेंडर प्रोसेस में क्रिमिनल गैंग्स की घुसपैठ काफी हद तक कम हो गई। बदले हुए नियम देखकर इंजीनियर डरे हुए हैं। उनका तर्क है कि अगर किसी भी कॉन्ट्रैक्टर/संस्था को किसी भी आधार पर हटाया जाता है, तो इससे रिस्क हो सकता है या नहीं। 'हम जो प्रोजेक्ट प्राइस (एस्टीमेट) तैयार कर रहे हैं, वह मार्केट प्राइस देखकर तय होता



है। तो, सवाल यह उठता है कि जो काम कीमत पर बिड मंगाता है, वह काम कर सकता है या नहीं। इसके बाद अगर हम फील्ड लेवल पर काम का इंस्पेक्शन करते समय क्वालिटी पर सवाल उठाते

हैं, तो हमारी जान खतरे में पड़ जाएगी। कॉन्ट्रैक्टर/फर्म कम कीमत पर काम करने पर हमसे रहम की उम्मीद करेगा। अगर वे रहम दिखाते हैं, तो सरकार एक्शन लेगी। तो अब हम दुविधा में हैं।

सरकार को पता होना चाहिए कि अगर इंजीनियरों ने किसी प्रोजेक्ट की लागत का अनुमान लगाया है और टेंडर मंगाए हैं, तो उससे 30 से 40% कम पर काम कैसे हो सकता है? इसी तरह, पहले जो -14.99% का नियम था, वह कई बातों पर विचार करने के बाद तय किया गया था। यानी, एक प्रोजेक्ट की सभी लागतों पर 15% ज्यादा केलकुलेट किया जाता है। इसमें 7.5% फर्म के प्रॉफिट के तौर पर और 7.5% ओवरहेड चार्ज के तौर पर दिया जाता है। अगर कॉन्ट्रैक्टर यह नहीं ले रहा था, और बिना प्रॉफिट के -14.99% पर काम करना चाह रहा था, तो कहा गया था कि काम तय किया जाएगा। बिना प्रॉफिट के कौन काम करेगा? अब, राज्य के कई बड़े प्रोजेक्ट 10 से -14.99% पर दिए गए हैं, लेकिन वे समय पर पूरे नहीं हुए। प्रोजेक्ट की शुरुआत में जो कीमत अनुमानित होती है, वह पूरा होते-होते अनुमानित कीमत

से 10 से 15% ज्यादा हो जा रही है। अब, अगर कोई -30% से -50% पर काम लेता है, तो वह समय पर काम कैसे पूरा करेगा? दूसरी ओर, ऑल ओडिशा कॉन्ट्रैक्टर्स वेलफेयर एसोसिएशन ने कहा है कि चूंकि -14.99% सिस्टम से काम में बहुत देरी हो रही है, इसलिए हमने यह मुद्दा उठाया है और मांग की है कि सरकार अनुमानित कीमत पर बोलियां आमंत्रित करने और लॉटरी के जरिए वर्क ऑर्डर देने का नियम बनाए। लेकिन सरकार ने अब -14.99% बढ़ा दिया है और यह नियम बना दिया है कि जो सबसे कम बोली लगाएगा, वही काम करेगा। इससे काम में क्वालिटी भी आएगी, पहले की तरह ताकतवर लोग आकर काम पर कब्जा कर लेंगे। ओडिशा के कॉन्ट्रैक्टर को काम नहीं मिलेगा। सरकार को पता होना चाहिए कि उसके इंजीनियर किस आधार पर एस्टीमेट बना रहे हैं।

7 जिलों और 24 जगहों के अंग्रेजी नाम बदले जाएंगे, जानिए उनके नाम

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर : इंग्लिश नाम बदलेंगे। और ओडिशा में किसी भी जगह का नाम इंग्लिश स्पेलिंग में लिखा जाएगा। राज्य के रेवेन्यू और डिजिस्टर मैनेजमेंट डिपार्टमेंट ने राज्य के 7 जिलों के इंग्लिश नाम और 11 जिलों की 24 जगहों के इंग्लिश नाम बदलने का फैसला किया है। इस बार में डिपार्टमेंट ने एक नोटिफिकेशन जारी किया है। अगर 15 दिन के अंदर कोई शिकायत या आपत्ति है तो शिकायत के साथ जानकारी देने का नोटिफिकेशन में रैलान किया गया है। खोरधा जिले को अब उसके ओडिया नाम के हिसाब से इंग्लिश में 'खोरधा' लिखा जाएगा। इसी तरह, ओडिया में देवगढ़ जिले को इंग्लिश में Deogarh लिखा जाता है, इसे ठीक करके इंग्लिश में भी Deogarh लिखा जाएगा। इसी तरह, कई जगहों पर इंग्लिश में 'D' के लिए 'R' लिखा जाता है। जैसे केंद्रपाड़ा को इंग्लिश में Kendrapara लिखा जाता है, महाकालपद को Mahakalapara लिखा जाता है, नयागढ़ को Nayagar लिखा जाता है, इसे इंग्लिश स्पेलिंग के



हिसाब से ठीक किया जाएगा।

7 जिलों के नाम बदले जाएंगे: देवगढ़ जिले को अब इंग्लिश में Deogarh नहीं लिखा जाएगा, बल्कि इसे ठीक करके Deogarh लिखा जाएगा। इसी तरह, कंधमाल को खोंडमल की जगह कंधमाल लिखा जाएगा, खोरधा को अंगुल की जगह अनुगोल लिखा जाएगा, बालासोर को

बालेश्वर लिखा जाएगा, केंद्रपाड़ा को केंद्रपाड़ा लिखा जाएगा, क्योरझर को केंद्रुझर लिखा जाएगा और नयागढ़ को नयागढ़ लिखा जाएगा।

24 जगहों के नाम बदले जाएंगे: मलकानगिरी जिले में पाडिया को अब अंग्रेजी में पॉडिया नहीं लिखा जाएगा। इसी तरह, देवगढ़ जिले में रैमाल को रियामल लिखा जाएगा। खोरधा जिले में बोलागढ़ का नाम बदलकर बोलागड़ा, बानपुर का नाम बदलकर जटनी, अंगुल जिले में पल्लहारा का नाम बदलकर पल्लहाराड़ा, कटक जिले में अथागढ़ का नाम बदलकर अथागड़ा, सलीपुर में सालेपुर का नाम बदलकर सालेपुर, बाराम्बा में बडम्बा का नाम बदलकर बडम्बा, बालासोर में नीलगिरी का नाम बदलकर नीलगिरी, केंद्रपाड़ा में औल का नाम बदलकर अली, मकालपाड़ा में महाकालपाड़ा का नाम बदलकर महाकालपाड़ा, क्योरझर में बारबिल का नाम बदलकर बड़बिल, क्योरझरगढ़ में, संबलपुर में रीरखोल का नाम बदलकर रेढ़ाखोल और नयागढ़ का नाम बदलकर दशपल्ला लिखा जाएगा।



राजस्थान सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री सुरेंद्र गौयल का 7 फरवरी को एक दिवसीय हैदराबाद प्रवास पर रहेंगे, सी. आर. कुमावत के अनुसार 10 बजे शमशाबाद इंटरनेशनल एयर पोर्ट पर आगमन होगा उसके बाद प्रवासी समाज बंधुओं और कार्यकर्ता से मिलेंगे उसके बाद 8 से 10 फरवरी को वेन्नई में कुमावत समाज द्वारा राधा कृष्ण मंदिर प्राण प्रतिष्ठा में भाग लेंगे

ध्यान फाउंडेशन चैत्रा गौशाला में शोड निर्माण की घोषणा

बेंगलूर/ श्री गुरुगणेश सेवा समिति, कर्नाटक बेंगलूर द्वारा बुधवार को पांडवपुरा दोड़ब्यादरहल्ली में स्थित ध्यान फाउंडेशन चैत्रा गौशाला का निरीक्षण किया गया। इस दौरान समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने गहन विचार-विमर्श कर सेवा कार्यों को और अधिक सशक्त बनाने हेतु अपने-अपने सुझाव रखे। इस अवसर पर पांडवपुरा दोड़ब्यादरहल्ली ध्यान फाउंडेशन चैत्रा गौशाला में एक शोड के निर्माण के निर्णय की घोषणा की गई, जो श्री गुरुगणेश सेवा समिति, बेंगलूर (कर्नाटक) के नेतृत्व में कराया जाएगा। यह शोड निर्माण गौवंश सेवा, करुणा, संवेदना और सम्पूर्ण, समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी का प्रतीक होगा। समिति का यह सेवा संकल्प निश्चित ही आने वाले समय में अनेक गौवंशों के लिए सुरक्षा, सुविधा और सम्मान का आधार बनेगा। अध्यक्ष ने इसकी घोषणा की, जबकि कोषाध्यक्ष ने समर्थन जताया। इस मौके पर चेयरमैन गौतमचंद्र धारीवाल, अध्यक्ष किरण चंद्र बोहरा, कार्याध्यक्ष आशीष बाफना, कोषाध्यक्ष मनोहरलाल बाफना, सह मंत्री महेंद्र मेहता, सदस्य प्रकाशचंद्र बाफना और पांडवपुर संघ के उपाध्यक्ष अशोक मेहता मौजूद थे। चेयरमैन गौतमचंद्र धारीवाल ने यह जानकारी दी।



झारखंड का सर्वाधिक बड़ा औद्योगिक क्षेत्र में अवैध पार्किंग से 2.40 लाख का चालान कटा

कार्तिक कुमार परिखा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, पुलिस अधीक्षक मुकेश लुनागत के निर्देशानुसार आदित्यपुर सेरे पंजाब मोड़ से गम्हारिया थाना चौक तक अवैध पार्किंग के विरुद्ध विशेष अभियान चला। इस अभियान के दौरान पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी यातायात थाना सरायकेला-खरसावाँ अपने यातायात कर्मी के साथ अवैध पार्किंग एवं चालक विहीन वाहनों के विरुद्ध यातायात नियमों के अनुसार कारवाई की। इस कारवाई में चालक विहीन अवैध पार्किंग किए गए 41 वाहनों पर करीब दो लाख चालीस हजार रुपये का ऑन लाईन फाइन किया गया। साथ ही हो रहे दुर्घटना को रोक थाम हेतु जागरूकता अभियान भी चलाया गया।



Adityapur Road, Adityapur, Jharkhand, 832109, India
Lat: 22.797366, Long: 86.135942
2026/02/05 05:07:20
Note: Captured by GPS Map Camera GMT+05:30

लक्ष्य को ध्यान में रख कर बनाया इस वर्ष का आम बजट

हरिहर सिंह चौहान

यह आम बजट युवा भारत के भविष्य को देखते हुए एक क्षेत्र को मजबूती प्रदान करने वाला है। कृषि, रोजगार, महिला सशक्तिकरण के साथ साथ छोटे टेक्सटाइल को सरल प्रक्रिया और युवा वर्ग को नौकरी देने पर जोर देने हेतु बहुत प्रयासों हैं। पर्यटन में संभावना तलाशना महंगी दवाईयों पर सस्ती करना और बौद्धिक संपत्ति को बना कर विश्व पटल में शांति अहिंसा व भाईचारे की मिशाल प्रस्तुत करना बहुत बड़ी बात है। पंख जो उड़ान भरने को तैयार हैं क्योंकि भारत के विकास में नई उड़ान वाला ये आम बजट भविष्य के लिए सिरमौर साबित होगा। झूठे फर्जों व लोकलुभावन घोषणाएं से दूर महिलाओं के स्टार्टअप और छोटे किसानों को खेती के लिए लोन की मदद से आत्मनिर्भरता की बनागी ही कहीं जा सकती हैं। जिससे सभी आमजन का जीवन सरल व सुलभ होगा। उच्च शिक्षा के लिए लड़कियों को सुरक्षित और सुविधाजनक हर जिले में ग्लॉस हॉस्टल की सुविधा मिलेगी। दक्षिण के राज्यों समेत पूरे देश में मस्य पालन व पशुपालन में सख्ती देना केंद्र सरकार की दूरगामी सोच है। क्योंकि बहुत से राज्यों की जिविका इन पर आधारित है। खेतों में इंडिया के तहत खेल व खिलाड़ी को हर एक खेल के में सहयोग देना आगे बढ़ाने हेतु उन्हें भी अब भारत के विकास में सहायक बनना होगा। वहीं दिव्यांगजनों के प्रति सच्चा व उदारता का भाव, उनके लिए नये सेक्टर बनेंगे। जिससे वहां भी अपना कार्य कोशल दिखा सके और उन्हें कोई परेशानी नहीं हो। वहीं एक योजना जो पूरे देश में चालू हो इसकी शुरुआत अभी कुछ राज्य सरकारों कर रही है, उन लक्ष्यपति दीदी योजना का विस्तार पर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने पर केंद्र सरकार और ध्यान देगी। पट्टरी पर रेलगाड़ी को रफ्तार के लिए हाई-स्पीड रेल चलाने पर जोर देने हेतु आगे बहुत काम करेगी। वहीं भारतीय परम्परा व संस्कृति में आयुर्वेदिक चिकित्सा सदियों पुरानी है। अब प्राचीन आयुर्वेदिक चिकित्सा पर भारत विश्व को आकर्षित करेगा और देश में इस पर आयुर्वेद के लिए एम्स बनाना बड़ी व अच्छी बात है। कुल मिलाकर इस वर्ष का बजट मोठी गोली नहीं है, वह तो कड़वी व असरदार दवा के रूप में है। जो विमारियों को खत्म करने में सहायगी साबित होगा। पशु पालन में नारियल, काजू की फसल में मददगार केंद्र सरकार बनेगी। विकासशील रफ्तार को रोकना नहीं जा रहा है वर्ष 2045 को लक्ष्य बना कर आधारभूत संरचना तैयार करना अच्छी बात है। क्योंकि लक्ष्य को ध्यान में रख कर बनाया इस वर्ष का आम बजट। जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था जीवनशैली और युवाओं में सकारात्मक बदलाव के साथ देश के प्रति फर्जों को निभाने की बाध है।

चंपाई के करीबी सानंद ने भरा सरायकेला में अध्यक्ष का पर्चा

आदित्यपुर मेयर पद हेतु चंपाई समर्थक ने उम्मीदवारी की दस्तक दी

कार्तिक कुमार परिखा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, पूर्व मुख्यमंत्री तथा सरायकेला के विधायक प्रतिनिधि सानंद आचार्य उर्फ टूटू ने आज निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में सरायकेला नगर पंचायत अध्यक्ष पद हेतु पर्चा भरा। बाजे गाजे के साथ बड़ी रैली लाकर सानंद ने अपना नामांकन दाखिल की। सानंद आचार्य भाजपा के समर्थित प्रत्याशी के रूप में माने जाते थे परन्तु अंतिम समय में सुमित चौधरी नामक एक उदयमान युवक को भारतीय जनता पार्टी ने समर्थन का पुलिंदा पकड़ा दिया।



आला नेताओं के निर्णय से ऐसा हुआ, जिससे सरायकेला भारतीय जनता पार्टी ईकाई तथा जेएमएफ में

शामिल हुए नेताओं में आगे चलकर रिश्ते पर खाई बढ़ना स्वाभाविक माना जा रहा है।

आज सैकड़ों पुरुष महिलाओं के साथ सानंद आचार्य ने अपना नामांकन समाहरणालय चुनावी कक्ष में दाखिल करते वक्त जोरदार प्रदर्शन की। आज एक बागी उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन किया है। चंपाई सोरेन के करीबी रहे सानंद ने कहा वे अपना राजनीति सफर में जनता के निकट रहे। सच तो यह है कि वे विगत कुछ समय से स्वयं को भाजपा में भली-भांति घुल-मिल कर रख पाने में बिल्कुल असमर्थ रहे हैं। वैसे चंपाई सोरेन ने अपने स्तर से चुनाव में इन्हें लड़ने हेतु एंडी चीट्टी एक कर सकते हैं कारण आदित्यपुर में भी चंपाई गुट से वागी उम्मीदवार ने पर्चा भरी है। आगे देखा दिलचस्प अब होगा कंट किस कदर करवट लेता है।

विनय चौवे ने डी सी रहते महावीर देवता की जमीन पर कराया था हाथ साफ : एसीबी झारखंड

रसूखदार एवं झारखंडी अफसर रहे हैं हजारीबाग में 5000एकड़ जमीन हेराफेरी के माहिर खिलाड़ी

कार्तिक कुमार परिखा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, हजारीबाग में सेवायत ट्रस्ट भूमि घोटाले में एसीबी ने अपने दस्तावेज में बताया है कि हजारीबाग के तत्कालीन डीसी विनय कुमार चौबे के कार्यकाल में देवता की जमीन की भी अवैध तरीके से खरीद-बिक्री कर दी गई। घोटाले में आरोपी जमीन माफिया सुधीर कुमार सिंह व विजय प्रताप सिंह से जुड़े मामले में दायर हलफनामे में एसीबी ने कोर्ट को बताया है कि कैसे रसूखदारों और अफसरों की मिलीभगत से देवता की जमीन की हेराफेरी की गई। देवता की थी जमीन, हस्तंतरण पर थी पूर्णरोक एसीबी ने कोर्ट को बताया कि वर्ष 1941 में गणपत रायसरोजी ने 2.75 एकड़ जमीन श्री श्री महावीर जी (देवता) को समर्पित की थी। डीडी की शर्तों के अनुसार, इस जमीन को कभी भी बेचा, हस्तंतरित या गिरवी नहीं रखा जा सकता था। हालांकि, बाद में

सेवायतों ने इसे निजी संपत्ति बताकर बेचने की कोशिश की, जिसे प्रशासन और पूर्व में उच्च न्यायालय ने 2005 में भी अवैध करार दिया था। किसे की जांच के दौरान एसीबी ने मनीष नारायण, प्रीति प्रसाद और नंद रानी सिन्हा की गवाही दी, जिनके बयानों से यह साफ हुआ है कि आरोपी सुधीर कुमार सिंह और विजय प्रताप सिंह पावर ऑफ अर्थोर्नो होल्डर बनकर खरीदारों को फांसे थे। वे खरीदारों को झांसा देते थे कि तत्कालीन हजारीबाग उपायुक्त विनय चौबे से उनके गहरे संबंध हैं और वे जमीन का म्यूटेशन आसानी से करा देंगे। गवाहों ने बताया है कि आरोपी अक्सर उपायुक्त कार्यालय में देखे जाते थे। 3.16 करोड़ का सौदा मनी ट्रेल और फर्जीवाड़ा एसीबी ने जांच में वित्तीय अनियमितताओं का पुनःजिक्रण न हलफनामे में किया है। बताया है कि वर्ष 2010 से 2015 के बीच ब्रह्मस्त्र एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड के खाते में 3.16 करोड़ रुपये



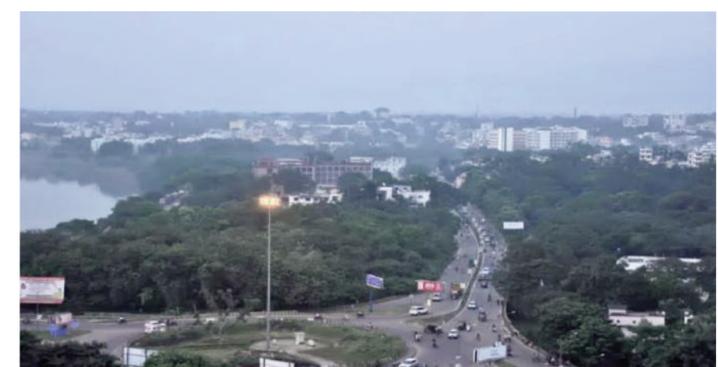
नकद जमाकिए गए। यह कंपनी विनय चौबे की पत्नी स्वपना संचिता व साले शिपिज त्रिवेदी की है। केस में एक पीडित को रॉ निवासी अरविंद कुमार अग्रवाल ने बताया कि आरोपियों ने उनसे सेवायत जमीन के बदले 25 लाख रुपये लिए, लेकिन न तो जमीन दी और न ही पैसे लौटाए। हलफनामे में बताया गया है कि मामले के अन्य आरोपी (सेवायत) न केवल जांच में असहयोग कर रहे हैं, बल्कि उन्होंने अदालत में फर्जी पते पर जमानत याचिकाएं दाखिल कर कोर्ट को गुमराह करने की कोशिश की है। एसीबी ने आशंका जताई है कि हजारीबाग जिले में केवल यही एक जमीन नहीं, बल्कि लगभग 5000 एकड़ सरकारी, वन, गैर-मजूर आ आम और खास महल भूमि का अवैध हस्तंतरण किया गया है। यह पूरा खेल तत्कालीन उपायुक्त विनय कुमार चौबे के कार्यकाल के दौरान रचा गया साजिश का हिस्सा बताया जा रहा है।

जमशेदपुर में आतंकी हमले की आशंका, दर्जनों स्लीपर सेल इलाके में

खुफिया रिपोर्ट के बाद पुलिस सतर्क

रांची, झारखंड का जमशेदपुर शहर को लेकर खुफिया एजेंसियों ने आतंकी हमले की आशंका जताई है। इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद राज्य सरकार और पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्क हो गया है, जिले के एसएसपी पीयूष पांडे समेत सभी आला अधिकारियों को सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने और लगातार निगरानी रखने के निर्देश मुख्यालय से दिए गए हैं। शहर के प्रमुख इलाकों रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, बाजार, औद्योगिक क्षेत्र और भीड़भाड़ वाले स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है। साथ ही इंटीलिजेंस ब्यूरो को आसपास के क्षेत्रों में भी नजर रखने का आदेश दिया गया है।

खुफिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि जमशेदपुर में कुछ स्लीपर सेल सक्रिय हो सकते हैं जिनका संबंध पाकिस्तान में आतंकी प्रशिक्षण देने वाले लोगों से बताया जा रहा है। रिपोर्ट के अनुसार इस नेटवर्क का संचालन आजादनगर के जाकिरनगर रोड नंबर-14 निवासी सैयद मोहम्मद अशियान कर रहा है। अशियान दिल्ली पुलिस की हिट लिस्ट में शामिल है और उसके निस्की



तलाश तेज कर दी गई है। सुरक्षा एजेंसियां उसके संपर्कों और संभावित ठिकानों की लगातार जांच कर रही हैं। जांच एजेंसियों की सिफारिश पर इंटरपोल ने सैयद मोहम्मद अशियान के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया है। इसके बाद से उसकी तलाश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की जा रही है। देश और विदेश में उसके नेटवर्क की भी जांच जारी है। अधिकारियों के अनुसार अशियान का भाई मोहम्मद जौशन पहले से ही दिल्ली की जेल में बंद है। उसे 9 अगस्त 2017 को आतंकी संगठनों से जुड़े होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था

जांच एजेंसियों को शक है कि अशियान और जौशन के संबंध अलकायदा नेटवर्क से रहे हैं। दोनों का नाम वर्ष 2016 के ओडिशा मामले में भी सामने आया था जब अलकायदा से जुड़े आतंकी अब्दुल रहमान कटकी की गिरफ्तारी हुई थी और उसके नेटवर्क का खुलासा हुआ था। खुफिया अलर्ट के बाद जमशेदपुर और आसपास के इलाकों में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। होटल, लॉज, किराए के मकानों और सौंदर्य स्थानों पर छापेमारी और जांच की जा रही है। पुलिस द्वारा नियमित रूप से वाहन जांच अभियान चलाया जा रहा है।

लोगों से अपील की गई है कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि या व्यक्ति की जानकारी मिलने पर तुरंत पुलिस को सूचित करें। अधिकारियों का कहना है कि आम जनता के सहयोग से ही किसी भी बड़ी साजिश को समय रहते नाकाम किया जा सकता है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है और हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है। सुरक्षा एजेंसियां पूरी तरह तैयार हैं और किसी भी खतरे से निपटने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। लोगों से शांति बनाए रखने और अफवाहों से बचने की अपील की गई है।